RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 88/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर

बाल विज्ञान पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर 2023

चकमक

मेरा पन्ना विशेषांक

मूल्य ₹ 100

हमारी चिट्ठी

हर साल की तरह इस साल भी हमने चकमक के मेरा पन्ना विशेषांक के लिए तुम सब से रचनाएँ मँगवाईं। हर साल की तरह तुमने हमें अपनी रचनाएँ भेजीं — कुछ हमारे सुझाए विषयों पर और कुछ अपने मन के विषयों पर लिख-बनाकर। सितम्बर माह के अन्त से ही तुम्हारी रचनाओं के मिलने का सिलसिला शुरू हो गया था। लेकिन जैसे-जैसे तुम्हारी रचनाएँ हमें मिलती गईं, हमें इस बात का आभास होने लगा कि इस साल बात कुछ अलग है। पिछले साल तक जहाँ रोज़ दो-चार रचनाएँ मिलतीं, वहीं इस बार तो जैसे तुम्हारी रचनाओं की बाढ़ ही आ गई।

पिछले चार हफ्तों में ही हमें सैकड़ों रचनाएँ मिली हैं तुमसे। किस्से-कहानियाँ, चिट्ठियाँ, पहेलियाँ, किताबों और फिल्म की समीक्षाएँ, चुटकुले, क्यों-क्यों के जवाब, कविताएँ तुमने लगभग सभी विधाओं में अपनी रचनाएँ भेजीं। सिर्फ इतना ही नहीं, तुमने चित्रों को भी अपनी बात रखने का ज़रिया बनाया। और कार्टून, कॉमिक के साथ-साथ अन्तर ढूँढो, भूलभुलैया, तुम भी बनाओ जैसी गतिविधियों के लिए भी चित्र भेजे। 15 प्रदेशों के 65 से भी अधिक कस्बों-गाँवों से हमें तुम्हारी रचनाएँ मिली हैं। हमने लगभग हर क्षेत्र की कुछ रचनाओं को इस अंक में शामिल करने का प्रयास किया है। बाकी कई रचनाओं को हम अगले साल के अंकों में ज़रूर छापेंगे।

इस अंक को बनाने में, तुम सबकी रचनाओं को देखने-पढ़ने में, हमें बहुत मज़ा आया। तुम्हारे किस्से-कहानियों और चित्रों में हमें तुम्हारा विवेक, तुम्हारी कलाकारी, कल्पना और हुनर दिखते हैं। तुम्हारी सोच, तुम्हारी इच्छाओं को समझने का मौका मिलता है। जितनी आसानी से तुमने हमें हँसाया, उतनी ही सरलता से तुमने बड़ी-बड़ी बातें भी कह दीं। और तुम्हारे चित्रों के तो क्या ही कहने। तुम्हारे द्वारा उकेरी गई लकीरें, इस्तेमाल किए गए रंग अपनी कहानी बताते हैं। अपने खुद के बारे में, अपने दोस्तों, परिवार वालों और पर्यावरण के बारे में तुम्हारी सजगता और चिन्ता तुम्हारी रचनाओं में साफ दिखती है। उम्मीद है कि तुम्हारी बातों को सिर्फ तुम्हारे हमउम्र साथी ही नहीं, बल्कि बड़ी उम्र के लोग भी ध्यान से पढ़ेंगे-सुनेंगे।

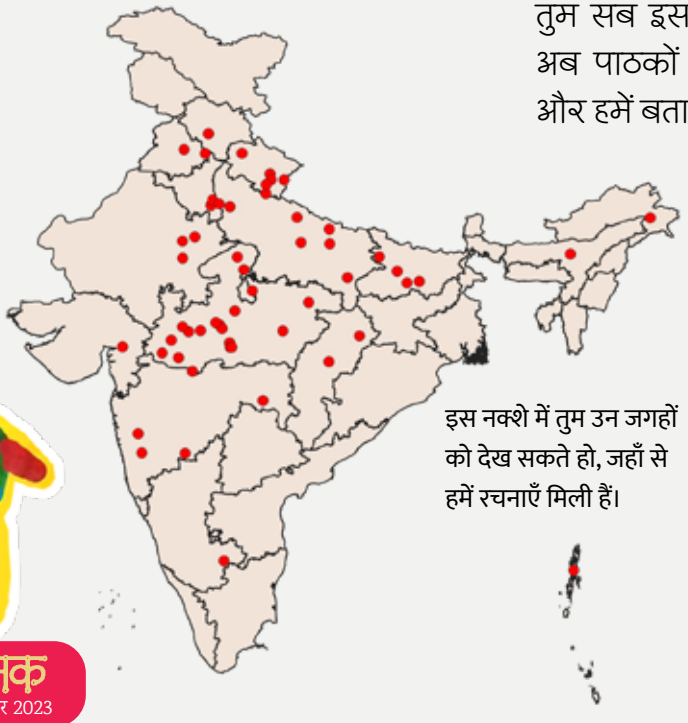

इस नक्शे में तुम उन जगहों को देख सकते हो, जहाँ से हमें रचनाएँ मिली हैं।

तुम सब इस अंक के लेखक और चित्रकार हो। अब पाठकों का किरदार निभाकर मज़ा लेना। और हमें बताना तुम्हें यह अंक कैसा लगा।

तुम सब को हमारा सलाम!
ढेर सारा प्यार
चकमक टीम

अंक 446-447 • नवम्बर-दिसम्बर 2023

चकमक

इस बार

काली लड़की	6
शेर आया	8
मिट्टी की खुशबू	12
चार पिल्ले	13
कुत्ते	13
माँ को छुट्टी क्यों नहीं?	14
चित्रपहेली	16
इस बार का 'रूह'	18
भूलभुलैया	22
मोर	23
शिकारी की ज़ुबानी	24
अन्तर ढूँढो	25
पिताजी दहशत में	26

आवरण: दिव्य श्याम, दूसरी, फातिमा स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

पेज नम्बर के साथ दिए चित्र: शान्वी यादव, नर्सरी 'ए', यश विद्या मन्दिर स्कूल, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 100

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य फाउण्डेशन के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

चित्र: सुरगी, सात साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच, बेंगलूरु, कर्नाटका

मुर्गी की याद 27
बहुत दुख हुआ 27
मेरे बाबा की कहानी 29
वो लड़की जो आसमान को खा गई 30
किताबें कुछ कहती हैं 34
छात्रावास 36
तुम भी बनाओ 37
गौल आया लक्ष्मी आश्रम में... 40
अन्तर ढूँढो 42
फूल और काँटा 43
माथापच्ची 46
टूटी, फटी, फीकी, मरी और भूतनी! 48
अन्तर ढूँढो 49
हमारा ठेला 50
चन्द्रयान व चाँद 53
पीदू और पीदन 54
बन्दरों का आतंक 55
भूतिया कुआँ 59
भूलभुलैया 60

चित्र: आर्यन सोनी, केजी टू, पुणे, महाराष्ट्र

जाँबाज़ कपड़े वाला	61
तुम भी बनाओ	62
माथापच्ची	64
क्यों-क्यों	66
चित्रपहेली	72
हामिद को हमारी चिट्ठी	73
पापा की दुकान	75
फिल्म चर्चा - दंगल	76
मेरे गाँव का नक्शा	77
नानी	77
सबसे अच्छा दोस्त	81
जाड़े की रात	81
दादी का चश्मा	82
चीं-चीं चिड़िया	83
तुम भी बनाओ	84
तुम भी जानो	87

चित्र: काव्यांश रघुवंशी, पाँचवीं, जेम्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

किताबें कुछ कहती हैं...

तुम भी बनाओ

चित्र: मुस्कान राठौर, सातवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

फिल्म चर्चा

तुम भी जानो

काली लड़की

खुशी
आठवीं, लर्निंग बाए लोकल्स, दिल्ली

एक गाँव में एक काली लड़की अपनी बीमार माँ के साथ रहती थी। काली लड़की घर-घर जाकर बरतन माँजती थी। उसके बदले लोग उसे थोड़ा दाल-चावल और पैसे भी दे देते थे। फिर काली लड़की घर जाते समय अपनी माँ की दवाई लेती और घर जाकर मिला हुआ दाल-चावल बना लेती। फिर वो अपनी माँ को खाना देती और खुद भी खाती। खाने के बाद काली लड़की अपनी माँ को दवा खिलाती और फिर दोनों सो जाते।

एक दिन काली लड़की काम खोजने जाती है, मगर उसको काम नहीं मिलता। काली लड़की जंगल में जाकर रोने लगती है। थोड़ी देर में वहाँ से एक बूढ़ी औरत गुज़रती है। वह काली लड़की से पूछती है कि तुम क्यों रो रही हो। तो काली लड़की बोलती है कि मेरी माँ बीमार है। और मुझे आज कोई काम नहीं मिला। अब मैं माँ के लिए दवाई कैसे लूँगी। बूढ़ी औरत कहती है कि तुम लकड़ी कटवाने में मेरी मदद करो। उसके बदले में मैं तुम्हें अनाज और थोड़े पैसे दूँगी। तुम उस पैसे से अपनी माँ के लिए दवा ले लेना।

काली लड़की बूढ़ी औरत की मदद करने लगी। काम करने के बाद बूढ़ी औरत ने काली लड़की को पैसे और अनाज दिया और कहा कि तुम हमेशा मेरे पास काम करने आना। मैं तुम्हें अनाज और पैसे दूँगी।

चित्र: शौर्य, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: अंशुल, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: अंशिका, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: ईशानी, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: अनूप, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: राघव कुमार, चौथी, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

शेर आया

चेतन चन्द
नौवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

शेर आया, शेर आया
आसपास सबको चौंकाया
क्या हुआ भैया?
शेर आया, शेर आया
आकर्षक, सुन्दरता से भरपूर था

कहाँ आया, कहाँ आया
सुनखरी में घुसकर आया
गाय को पकड़कर खाया
भागो भैया, भागो भैया
शेर आया, शेर आया

चित्र: विकास, छठवीं, राजकीय जूनियर हाई स्कूल, पाभै, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

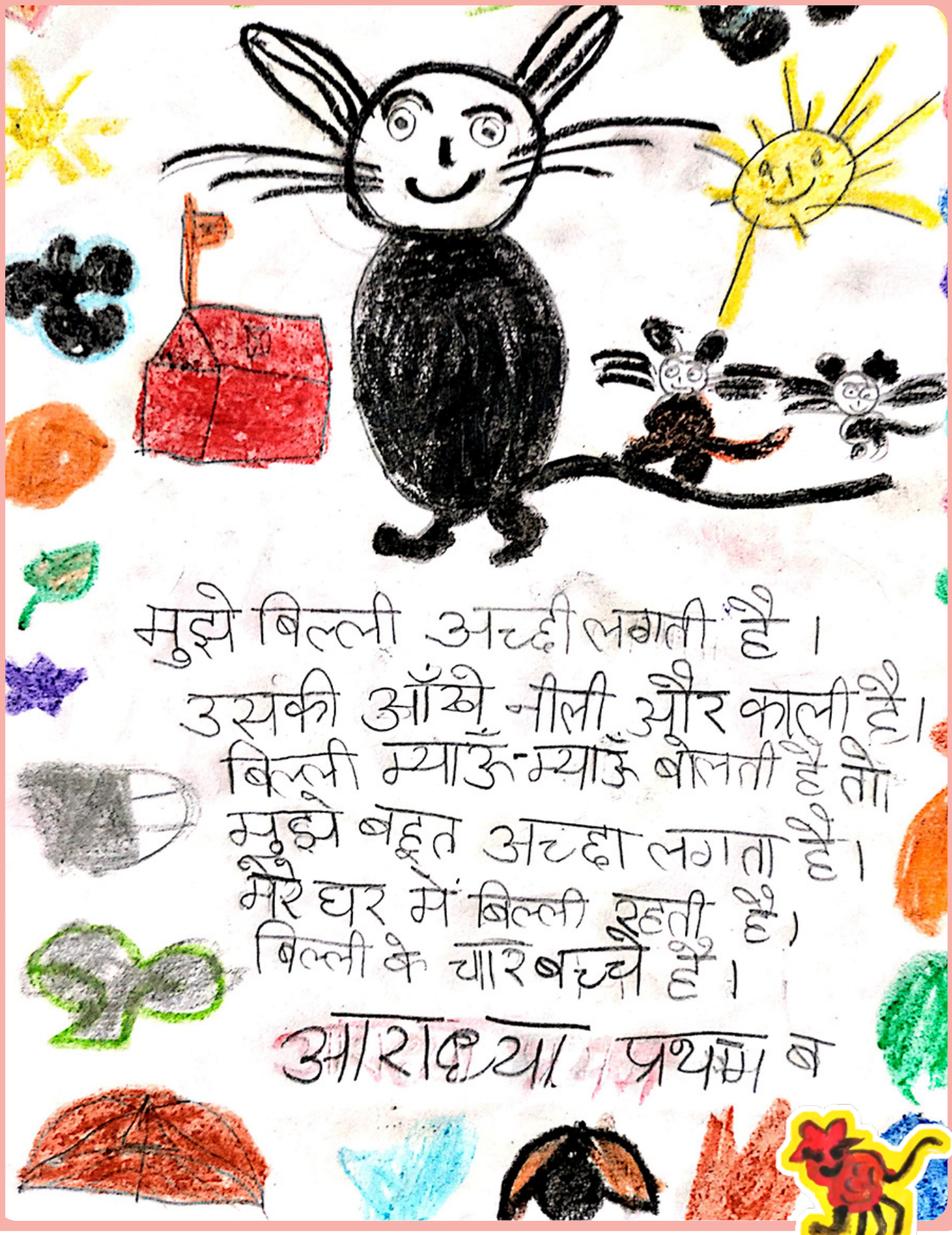

चित्र: आराध्या, पहली, यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

आदरणीय इसरो प्रमुख सर,

मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ। क्योंकि आपकी टीम ने चन्द्रयान-3 को सफलतापूर्वक चाँद पर भेजकर हम बच्चों में अन्तरिक्ष को समझने व जानने में अत्यधिक रुचि पैदा कर दी है। 23 अगस्त 2023 को मैंने टीवी पर चन्द्रयान-3 के लैंडर के चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने का सीधा प्रसारण भी देखा।

यह सब देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि हम लाखों किलोमीटर की दूरी कैसे तय कर लेते हैं, जबकि रॉकेट को चलाने के लिए तो उसमें कोई बैठा भी नहीं होता है। सर मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि चन्दा मामा हम सब बच्चों के बहुत प्यारे हैं। आप जल्द ही ऐसा यान भी बनाएँ जिसमें हम बच्चों को बैठाकर चाँद तक ले जाया जाए। और आपकी टीम हम बच्चों को अन्तरिक्ष और चन्दा मामा के बारे में वहीं पर सब समझाए।

आशा है मेरी चिट्ठी आप तक पहुँचेगी और आप हम बच्चों के लिए जल्द ही ऐसा चन्द्रयान बनाएँगे जिसमें हम सभी बैठकर चाँद पर जा सकेंगे।

धन्यवाद।

तनवी सोलंकी

सातवीं, लॉयन्स जूनियर कॉलेज

मनावर, धार, मध्य प्रदेश

चित्र: हितांश जोशी, पहली, केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

चित्र: द्युति, चौथी, फातिमा स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरी चिट्ठी

चित्र: कृशांग, छठवीं, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मिट्टी की खुशबू

गौतम कुमार
चौथी, श्री गुरुनानक मध्य अँग्रेज़ी विद्यालय
नगाँव, असम

चित्र: शर्वरी दलवी, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमारे गाँव की मिट्टी
हमारे गाँव का फल
हमारे गाँव की मिट्टी
बहुत ही कोमल
इस मिट्टी में पौधे लगाओ
तो पेड़ उग जाएगा
कुछ दिन में ही उसमें
फल उग आएगा
उस फल को जो खाएगा
उसका ही गुन गाएगा
जो चिड़िया उस फल को खाएगी
उस पेड़ पर रोज़ आएगी
हर जगह इस मिट्टी की
खुशबू फैल जाएगी

चार पिल्ले

दिशा शर्मा
दस साल, दिल्ली

कुछ दिन पहले की बात है। हमारी गली में एक कुतिया ने चार बच्चों को जन्म दिया। वो बहुत प्यारे और सुन्दर हैं। मैं उनको शाम को दूध देती हूँ। वे अपनी माँ के पीछे घूमते रहते हैं। जहाँ उनकी माँ जाती है, वो वहीं जाते हैं। कल रात एक पिल्ला नाली में जा गिरा। जब मैंने उस पिल्ले की रोने की आवाज़ सुनी तो मैं तुरन्त घर से बाहर आ गई। कुछ लोगों की मदद से मैंने उसे नाली से निकाला। फिर मैंने उसे दूध व खाना दिया। वो बहुत डरा हुआ था। फिर जब उसकी माँ ने उसे प्यार किया तो वह खुश हो गया और खेलने लगा।

चित्र: विद्या चन्देल, छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: अक्षिता शर्मा, छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी
देवास, मध्य प्रदेश

कुत्ते

सोहिल
सातवीं, समूह रोशनी, दिगन्तर विद्यालय
भावगढ़, जयपुर, राजस्थान

एक बार की बात है। मैं रास्ते से जा रहा था तो मेरे पीछे कुछ कुत्ते पड़ गए। उनमें से दो काले थे और दो सफेद। मैं तो डर के मारे बहुत तेज़ भागा। वो कुत्ते भी मेरे पीछे-पीछे भागे। फिर मैं एक घर में घुस गया। घर में से एक आदमी आया और बोला कि बेटा यह सारे कुत्ते हमारे हैं। फिर उन अंकल ने उनसे मेरी मुलाकात करवाई और मैंने उनसे दोस्ती कर ली। अब मैं जब भी उस गली में से गुज़रता हूँ तो वह कुत्ते मेरे पीछे नहीं पड़ते, बल्कि मेरे पास में आकर प्यार से मेरे पाँव को चाटते हैं जो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

चित्र: अतिफ़ा, छह साल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

माँ को छुट्टी क्यों नहीं?

सूरज रैगर
बामोर, टोंक, राजस्थान

घर में सबसे सुना होगा कि आज रविवार है। मेरी स्कूल की छुट्टी है। मेरी दीवाली की छुट्टियाँ लग गई हैं। मेरी तबीयत खराब है। मैं ऑफिस नहीं जाऊँगा। आज मेरा कोई काम नहीं है। और भी कई कारणों से छुट्टी होती है। मगर हमने कभी भी सोचा है कि जब हमें छुट्टी मिल सकती है तो माँ को क्यों नहीं। वो रोज़ाना सुबह से लेकर रात तक हम सबका ध्यान रखती हैं, जब भी कोई त्योहार होता है तो माँ कितने सारे काम सम्भालती हैं। कभी भी अपने काम से छुट्टी नहीं लेतीं, चाहे फिर उसकी तबीयत कितनी ही खराब क्यों न हो जाए। हमेशा पहले हमें खाना खिलाती हैं। बाद में वो खाना खाती हैं। मगर आज तक उन्होंने कभी भी अपने लिए छुट्टी की माँग नहीं की। आखिर ऐसा क्यों?

सही में हम बहुत खुशनसीब हैं कि हमें माँ मिलीं। मैं उन सभी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ जो बिना कोई छुट्टी की माँग किए अपना कार्य निभा रही हैं।

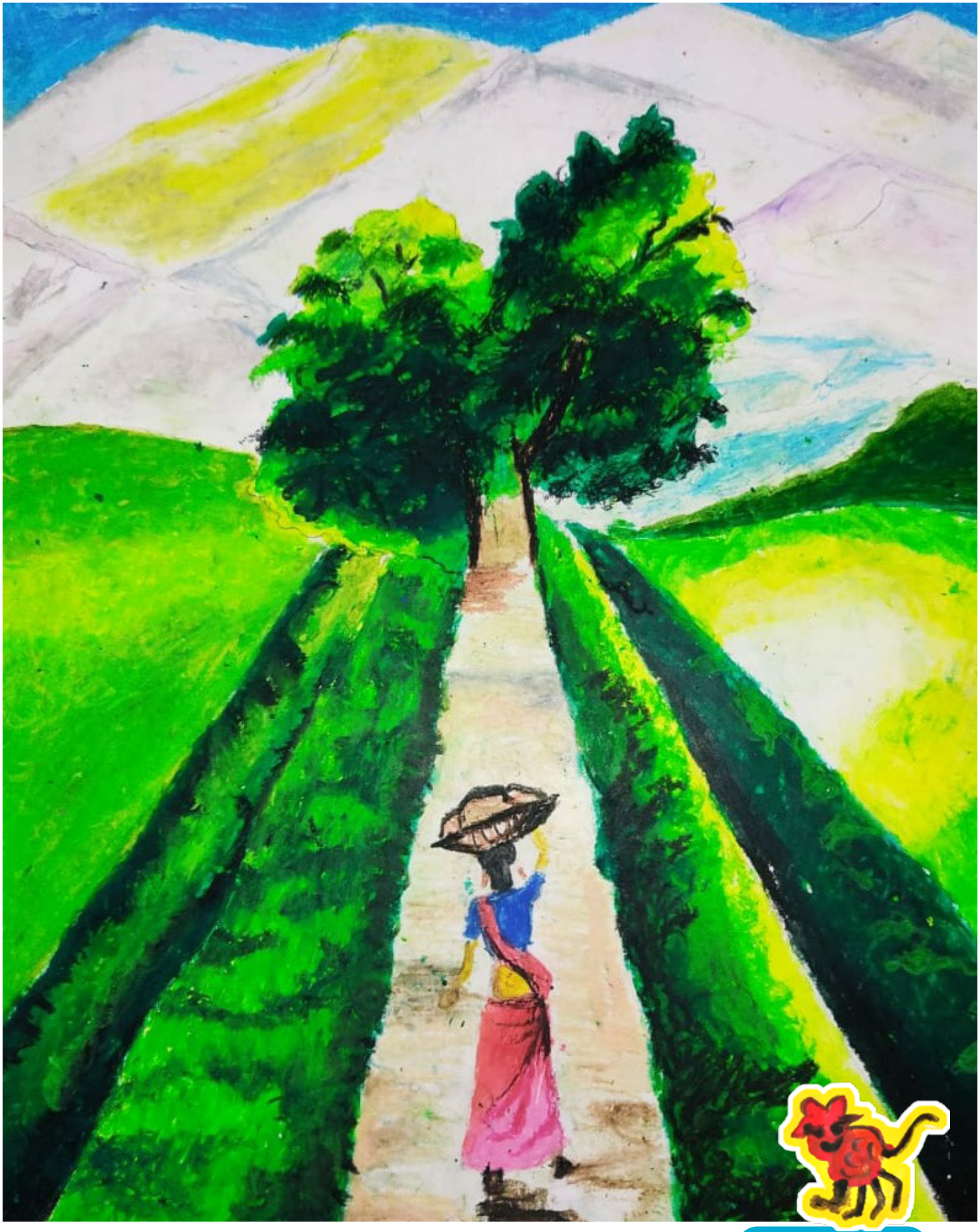

चित्र: विमल शर्मा, नौवीं, कुन्दन विद्या मन्दिर, लुधियाना, पंजाब (स्लैमआउट लाउड संस्था से प्राप्त)

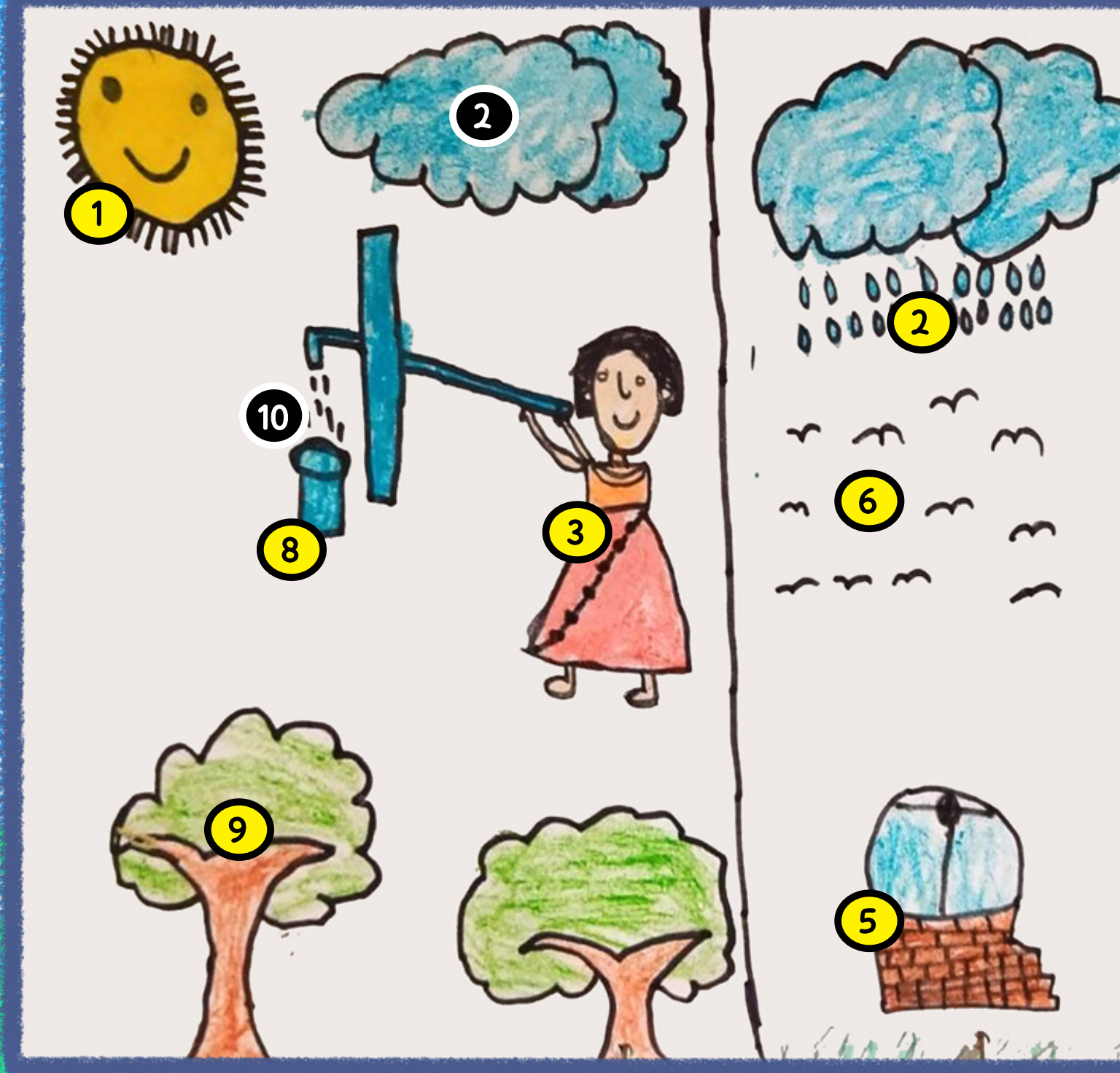

चित्र: दीक्षा सेन, गाँव इटाया कलां, मण्डीदीप, रायसेन, मध्य प्रदेश

चित्र पहेली

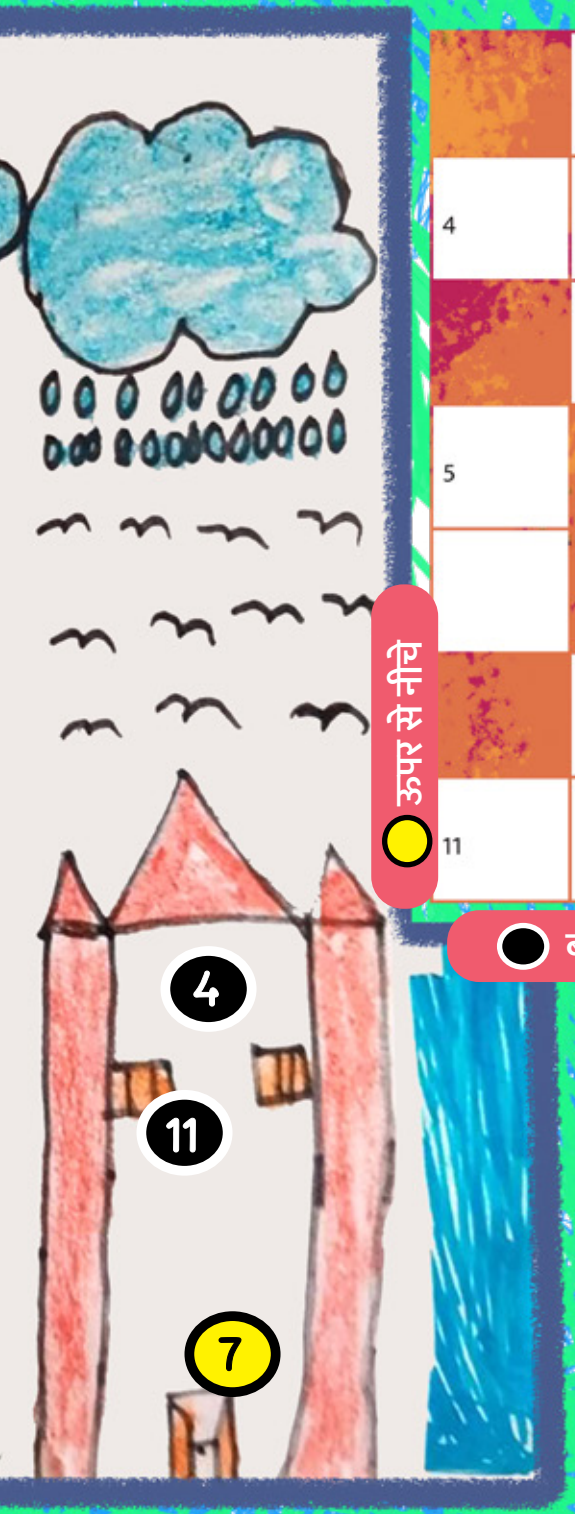

ऊपर से नीचे

बाएँ से दाएँ

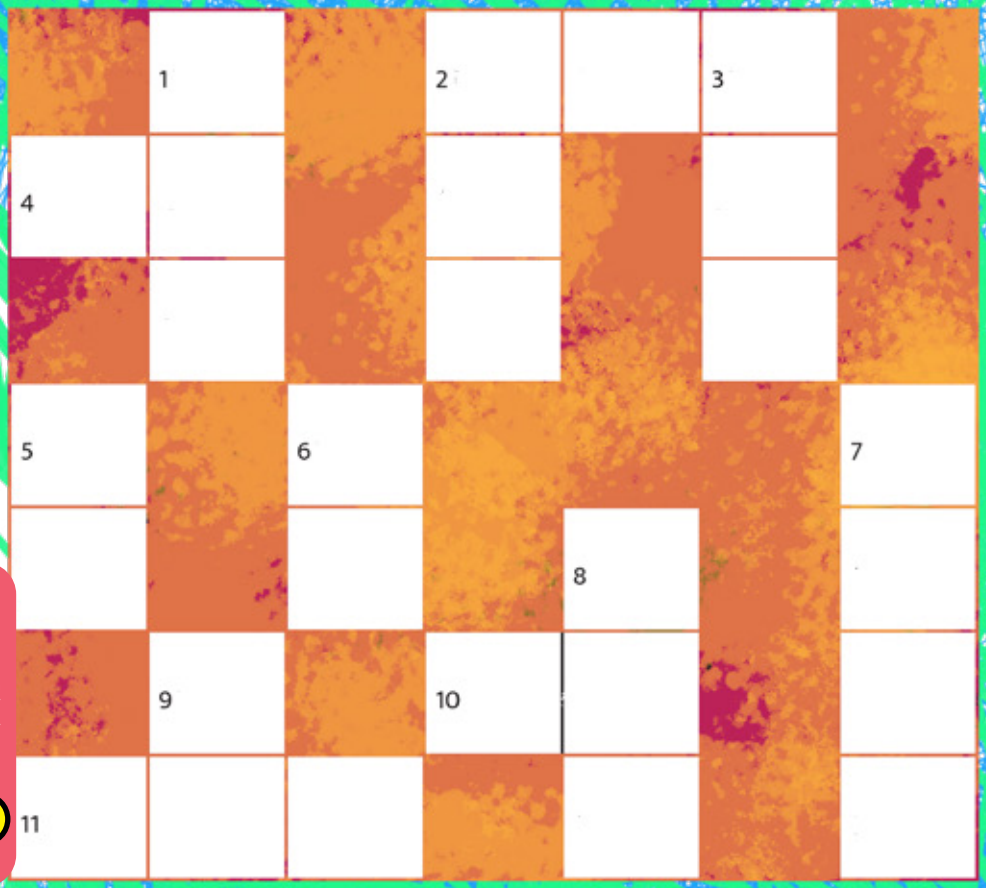

मेरे प्यारे मिट्ठू,

मुझे उम्मीद है कि तुम खुले आकाश में उड़ान भर रहे होगे। मुझे वो दिन आज भी याद है जब तुम उड़ गए थे। वो रक्षाबन्धन का दिन था। तुम मेरे भाई जैसे ही तो थे। मुझे तुम्हारी बहुत याद आई। मैं रोज़ाना तुम्हारा रास्ता देखती कि तुम शायद आ ही जाओ। पर ऐसा होता ही नहीं था।

एक दिन एक तोता आया। मुझे लगा कि वो तुम ही हो। मुझे बहुत खुशी हुई। हम सब अब कहीं और रहते हैं। मैं तुम्हारे साथ बहुत खेलती थी। मैं हमेशा चाहती हूँ कि तुम सदैव खुश रहो और आज़ाद बने रहो।

तुम्हारी दोस्त
मनिका
छठवीं, वॅरिन एकेडमी, करतारपुरा, जयपुर, राजस्थान

मेरा पन्ना

जवाब पेज 86 पर

इस बार का 'रूह्क'

दिव्या
बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
स्यांजी, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

धान की रोपाई को हम अपनी मण्डयाली बोली में 'रूह्क' कहते हैं। जुलाई के महीने में रूह्क लगाने का काम शुरू हो जाता है। जुलाई का महीना आते ही घरवाले जैसे पागल ही हो जाते हैं और अपने बच्चों को भी पागल कर देते हैं। अगर हम से पहले कोई रूह्क लगा दे तो घरवालों का साँस लेना ही मुश्किल हो जाता है। सुबह-शाम एक ही रट लगाए फिरते हैं, "सबने रूह्क लगा दिया और हम रह गए। अब हमारा क्या होगा?" बस फिर क्या, हम सबकी ऐसी की तैसी हो जाती है। जुलाई के महीने में हमें बरसात की छुटियाँ होती हैं जो आधी तो खेतों में ही बीत जाती हैं। हम लोगों का तो जैसे जीना ही मुश्किल हो जाता है।

मेरा तो रूह्क लगाने का यह अनुभव रहा है कि सुबह जल्दी उठ जाओ और शाम को देरी से घर आओ। जब सिर के ऊपर धूप पड़ती है तो मुझे मेरी नानी याद आ जाती हैं। मुझे ऐसा लगता है कि स्कूल की छुट्टियाँ ना हुई होतीं तो अच्छा था क्योंकि स्कूल में बड़ा आनन्द मिलता है। यह बात अलग है कि हम वहाँ पढ़ते थोड़ा कम हैं और मस्ती ज़्यादा मारते हैं। पर अब जब छुट्टियाँ हो ही गई हैं तो हमारे घरवालों ने तो हमें बैलों की तरह ही समझ लिया है। हाय! कहाँ गए वो बैल। आज उनकी बड़ी याद आ रही है। मेरा तो यह मानना है कि मेरे घरवाले यदि सारे

खेत मेरे नाम कर दें तो मैं उन्हें तुरन्त बेच दूँगी। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। पर फिर सोचती हूँ यह बहुत गलत हो जाएगा। फिर हम खाएँगे क्या? मण्डयाली में एक कहावत है — “ना हलो, ना खलो” यानी न काम का, न काज का। हमारे माता-पिता का हमारे लिए यही कहना है।

उफ्फ! उनकी बातें हमें मार ही डालेंगी। पर चलो, हमने साथ मिलकर तीन दिन में ही ‘रूह्ल’ खतम कर दी। पर उसके बाद जो हालत हुई। हाए! ना ठीक से चला जा रहा था, ना ठीक से सोया जा रहा था। मगर कहते हैं ना कि माँ भगवान का दिया सबसे बड़ा उपहार है। तो वह हमें तकलीफ में कैसे देख सकती है? माँ ने फिर मेरी मालिश की तो मुझे बहुत राहत मिली। माँ तो माँ है साहिब! चप्पल ना मिले तो वह बेलन से ही कूट देती है।

चित्र: नव्या, छठवीं, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मेरी चिट्ठी

प्रिय मित्र किसान,

एक दिन मैं आपके खेत के ऊपर से गुज़र रही थी। मैंने देखा कि वहाँ पर एक बजरबट्टू लगा है। मैं उसके ऊपर जाकर बैठ गई। उसके ऊपर बैठकर मुझे अच्छा लगा। फिर मैंने देखा कि एक दाल के पेड़ में केंचुआ लगा है। मैंने दाल के साथ केंचुआ भी खा लिया। दाल मेरे गले की नली से बड़ी थी। इसलिए मेरे गले में अटक गई। फिर मैं बहुत छटपटाती रही और बाद में मैं उड़ते-उड़ते नदी तक पहुँची। पानी पीकर मैंने खुद को सँभाला। अब तुम छोटी दाल उगाना।

धन्यवाद!
तुम्हारी मित्र
छोटी चिड़िया

चित्र: सुकांक्षा खरे, एलकेजी, रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल, दतिया, मध्य प्रदेश

चित्र: अंजली राठौर, तीसरी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, बैजनाथ, उज्जैन, मध्य प्रदेश

प्रिय चिड़िया,

मैं किसान, जिसे तुमने पत्र लिखा था। तुमने खत लिखा यह अच्छी बात है। लेकिन तुमने जो कुछ मेरे खेत से खाया उसकी भरपाई कौन करेगा?

वैसे तुम मेरे खेत से खा लिया करो। लेकिन रोज़ मत आना। ऐसे तुम रोज़ आओगी और रोज़ खाओगी तो मेरी आमदनी में अच्छा प्रभाव नहीं होगा।

तो कृपया करके रोज़ न आया करो।

तुम्हारा दोस्त
किसान

दोनों चिट्ठियाँ: आयुष पाल, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

किसान भाई,

मैं वही चिड़िया हूँ, जो तुम्हारे खेत में अक्सर आती रहती है। मैं तुम्हें यह खत कुछ बताने के लिए लिख रही हूँ। तुमने खेत में जो नकली आदमी रखा है, तुम सोच रहे होगे कि हम उससे डर जाएँगे। पर तुम्हें पता है कि हम उस नकली आदमी से डरते नहीं हैं। पहले हम थोड़ा डरते थे, पर अब वह हमारे आराम करने की कुर्सी बन चुका है। इसलिए हमें डराने के लिए कोई और तरीका ढूँढ लो।

तुम्हारे खेत में आने वाली
अलीशा चिड़िया

प्रिय चिड़िया बहन,

तुमने मुझे पत्र के द्वारा जो सूचना दी उसके लिए धन्यवाद। मुझे पता है तुम उस नकली आदमी से नहीं डरती हो। पर मैं और कर भी क्या सकता हूँ? खेत में बिजूका लगाऊँ तो तुम्हारी कुर्सी बन जाती है। मैं खुद तो वहाँ हर समय खड़ा नहीं रह सकता हूँ।

तुम मुझे कुछ सुझाव दो जिससे तुम्हारी चिड़िया दोस्त डर जाएँ और मेरे खेत में न आएँ।

तुम्हारे खेत का मालिक
शुत्तो लाल दास

दोनों चिट्ठियाँ: अलीशा, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

चित्र: शुभदा लोखण्डे, छठवीं, सावित्रीबाई फुले इंग्लिश मीडियम स्कूल, मोशी, पुणे, महाराष्ट्र

मोर

आस्था
पहली, यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

मेरे बाग में मोर रहता है। मोर का पंख बहुत अच्छा लगता है। मम्मी भगवान को मोर का पंख लगाती हैं। मोर बारिश में नाचता है।

चित्र: ब्यूटी कुमारी, तीसरी, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

चित्र: अरमान पटेल, सातवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

शिकारी की ज़ुबानी

प्रणय
सातवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक शाला चकनिम्बाला
चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

मेरे दादा-दादी मुझे ये कहानी सुनाते हैं। वे कहते हैं कि उनके ज़माने में ताडोबा के जंगलों में बाघ और कई प्रकार के जानवरों का शिकार किया जाता था। शिकारी आते थे। बन्दूक लेकर जंगलों में घात लगाए बैठते थे और जानवरों का शिकार करते थे। अब तो शिकार पर पाबन्दी है। ये जंगल अभ्यारण्य बन चुका है।

तो ये उन दिनों की बात है जब जानवरों का चोरी से शिकार होता था। एक शिकारी था। वो दोपहर से ही तालाब के किनारे पत्थर के पास घात लगाए बैठा था। शाम को झाड़ियों से बाघ निकलकर आया। उसने शिकारी को देखा। शिकारी डर गया। हड़बड़ी में उसने बन्दूक तान दी। और जैसे ही बाघ उस पर झपटने वाला था शिकारी ने गोली दाग दी। बन्दूक से गोली सही समय पर निकली। और बाघ के एक कान से घुसकर दूसरे कान से निकल गई। बाघ वहीं ढेर हो गया। शिकारी घबरा गया। बाघ उसका शिकार गलती से हुआ था। वो तो छोटा-सा जानवर मारने आया था। उसने उस बाघ को वहीं दफना दिया।

गोली की आवाज़ से फॉरेस्ट वाले जाग गए। वे शिकारी और शिकार को खोजने लगे। शिकारी तो भाग गया था। लेकिन कुछ दिनों बाद बाघ का शव मिला। शिकारी को भी पकड़ लिया गया। शिकारी चालाक था। वो बोला, “अगर बाघ गोली से मरा है, तो निशान दिखाओ।” निशान सच में नहीं थे। शिकारी को 2 महीने जेल में रखकर छोड़ दिया गया।

बाघ की मौत तो आई थी, शिकारी की जान बचनी थी। जो होना था, वो हो गया। कुछ दिनों बाद शिकार हमेशा के लिए बन्द हो गया।

अब लोग शिकार नहीं करते, शिकार होते हैं।

ढूँढो अन्तर

चित्र: बादल, तीसरी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, झिरन्या, खरगौन, मध्य प्रदेश

इन दो चित्रों में कुछ अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

पिताजी दहशत में

पूनम आत्राम
छठवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक शाला
चकनिम्बाला, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

चित्र: आदित्य नागर, सातवीं 'सी', सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

गाँव में तेन्दुए का आतंक बढ़ रहा था। वो रात को गाँव में घुस आता। मुर्गी, बकरी चुरा ले जाता। धूपकाल के दिन थे। पिताजी आँगन में खटिया पर सोते थे। बाजू में कुल्हाड़ी रखते थे। हम सब घर के अन्दर सोते थे।

एक रात तेन्दुआ हमारे घर में घुस आया। उसकी आहट से माँ ने दरवाज़ा खोलकर देखा। मुर्गी का टोकरा खटिया के बाजू में ही था। तेंदुआ खटिया के पास से गुज़र ही रहा था कि पिताजी ने करवट बदली। उनका हाथ खटिया के बाहर निकला और तेन्दुए की पूँछ पिताजी के हाथ लग गई।

माँ घबरा गईं। वह ज़ोर-ज़ोर से तेन्दुआ-तेन्दुआ चिल्लाने लगीं। पिताजी घबराकर उठ खड़े हुए। तेन्दुए की पूँछ उनके हाथ में थी। हड़बड़ाहट में तेन्दुए को उन्होंने इस छोर से उस छोर पटक दिया। तेन्दुआ भाग गया। लेकिन वो क्या कर रहे हैं, ये उनकी समझ में भी नहीं आया। जो हुआ, अनजाने में हुआ।

तेन्दुए को भागते देख पिताजी के होश उड़ गए। उन्होंने माँ को ही डाँटना शुरू कर दिया। शायद डर के मारे दोनों के दिमाग काम करना बन्द कर दिए थे। लेकिन सुबह ये किस्सा गाँववालों को सुनाते हुए वे हँस-हँसकर लोटपोट हो रहे थे।

बहुत दुख हुआ

संजीवनी साहू
पाँचवीं, कम्पोज़िट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक रविवार पापा ने कहा कि चलो आज जलेबी और समोसे खाने चलते हैं। हम लोग होटल पहुँचे। हम जलेबी खा रहे थे कि तभी मैंने देखा एक आदमी सड़क के किनारे एक छोटे-से पटरे पर बैठा था। उस पटरे में छोटे पहिए लगे थे। वह सड़क पर हाथ रगड़कर आगे बढ़ता था। वह चल नहीं सकता था। वह होटल वाले से खाना माँग रहा था। होटल के मालिक ने उसे फेंककर कुछ दिया। उसके सर के बाल उलझे थे। उसे देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।

मुर्गी की याद

निखिल सिटौले
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय
झिरन्या, खरगौन, मध्य प्रदेश

मेरे घर पर छह मुर्गियाँ थीं। एक दिन बरसात में मेरी मुर्गी चरने गई थी। क्या पता कुत्ते ने या मांजरे ने या लोगों ने पकड़ लिया था। फिर मेरे पापा ने बोला कि क्या पता मुर्गी बरसात में कहीं छुप गई होगी। पर मुर्गी आई नहीं थी। सब मुर्गियाँ कुकड़ू-कू करके उस मुर्गी को बुलाने लगीं। लेकिन वो मुर्गी आई नहीं। मुझे उसकी याद रोज़ आती है। मैं उसके साथ पकड़म-पकड़ाई खेलता था। मुझे उसके साथ खेलने में बड़ा मज़ा आता था। वो मुझे अण्डे देती थी। अण्डे खाकर सर्दी-ज़ुकाम बन्द हो जाता था।

चित्र: चित्ररेखा निषाद, तीसरी, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, लमती, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

मेरे बाबा की कहानी

शनिपाल
पाँचवीं, कम्पोज़िट स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

लॉकडाउन में खाने-पीने की परेशानियाँ झेलते समय मेरे बाबा ने मुझे अपने समय की बातें बताईं। तब उनके पास 50-60 भेड़ें हुआ करती थीं। पूरे गाँव में सब के पास थीं। इसीलिए गाँव के आसपास भेड़ों के लिए चारे की दिक्कत वर्ष भर बनी रहती थी। तब बाबा अपने समूह के साथ अपनी-अपनी भेड़ों के झुण्ड को दूर पहाड़ियों पर ले जाते थे। वहाँ हरी-हरी घास और पीने को ताल का पानी मिल जाता था। परन्तु भेड़ के साथ जाने वाले आदमियों के रहने और खाने-पीने की बहुत समस्या होती। वे अपने खाने के लिए गेंहूँ, चना, नमक, नींबू, प्याज़ और आटा ले जाते थे। वहाँ रात में गेंहूँ भिगो देते। सुबह तक वह फूल जाता, तो उसमें नींबू और नमक डालकर खाते। कभी आटा से भोरी (एक तरह की बाटी) लगाकर खाते, तो कभी चना भिगोकर।

सोना तो खुले आसमान के नीचे ही होता था। समूह मिलकर रहते थे। कोई लकड़ी बीनता तो बाकी लोग उसकी भेड़ की देखरेख करते। लकड़ी जलाने के लिए पत्थर जोड़कर छोटा चूल्हा भी बनाते। बटुली में समूह के पाँच-छह आदमियों के लिए खिचड़ी या लपसी पकती। सब मिलकर सागौन के पत्तों पर खाना खा लेते।

यह सब बताते-बताते बाबा की आँखें नम हो गईं। वे बोले कि आज समूह के वही सब लोग पट्टीदार ज़मीनों के लिए एक-दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। दिन भर कोर्ट-कचहरी करते रहते हैं। बाबा ने बताया कि उन्हें तो लॉकडाउन जैसी समस्या जीवन भर झेलनी पड़ी है।

चित्र: गज़ल फारूक काझी, दूसरी, ज़िला परिषद प्राथमिक स्कूल, गौडवाडी, सोलापुर, महाराष्ट्र

चित्र: आरवी वर्मा, पहली 'बी', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

वो लड़की जो आसमान को खा गई

चित्र व कहानी: धृति अग्रवाल
ग्यारह साल, पुणे, महाराष्ट्र

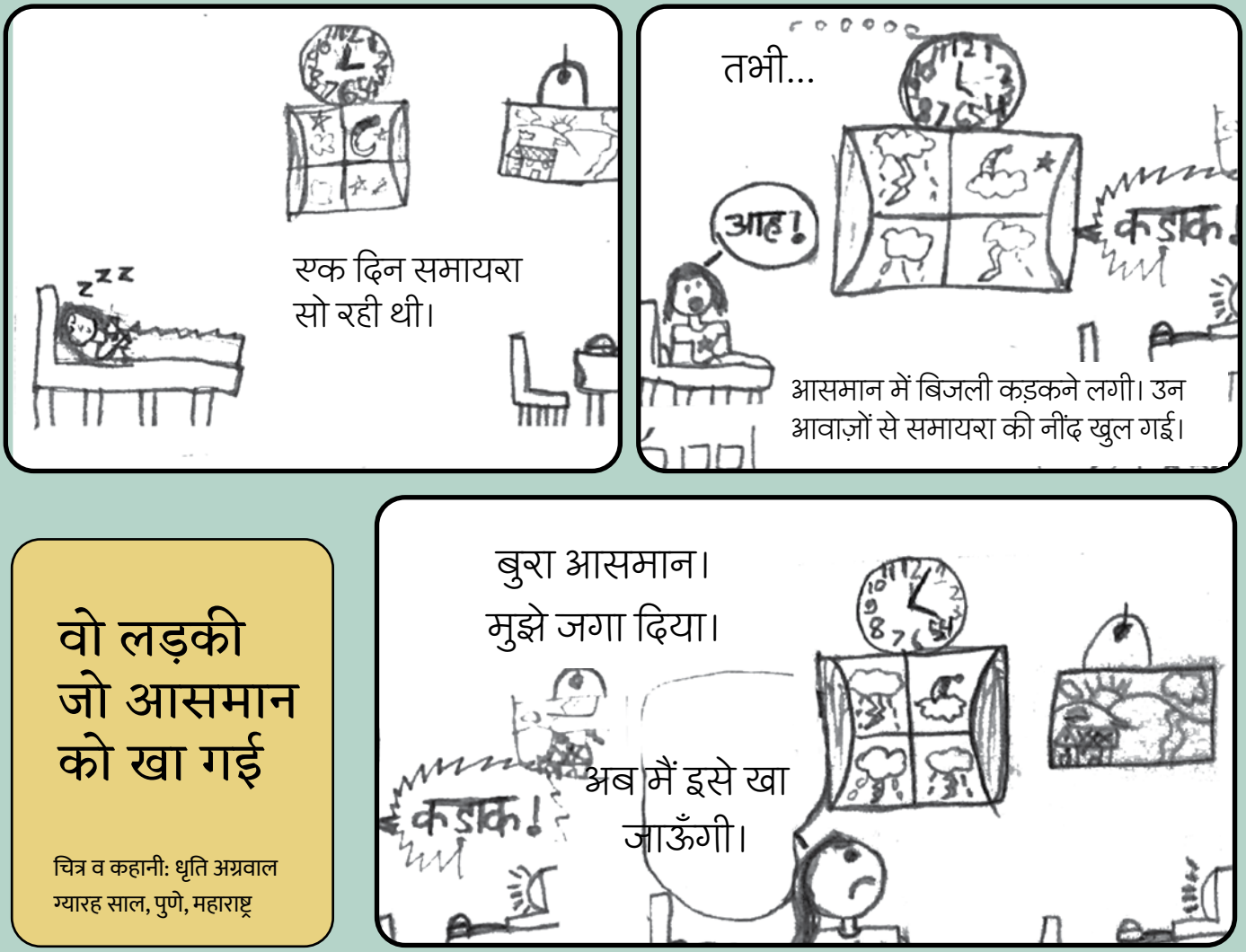

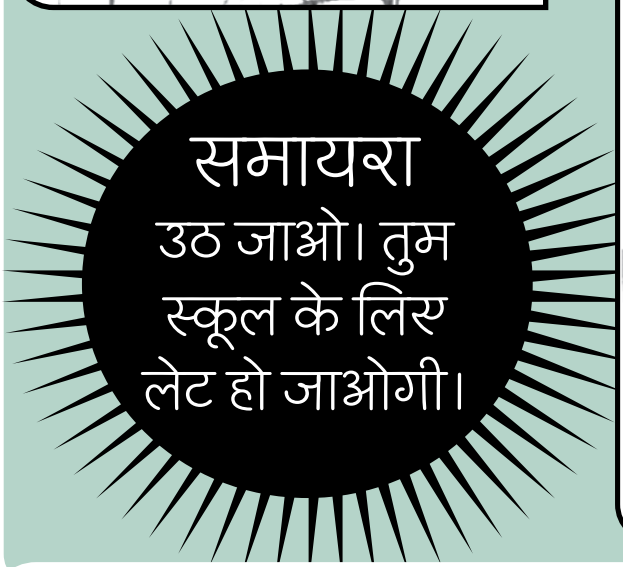

चित्र: अनुष्का कुमारी, आठवीं, बैम्बूसा लाइब्रेरी, तेजू, अरुणाचल प्रदेश

मेरी चिट्ठी

दोनों चिट्ठियाँ:
रितेश, छठवीं,
अज़ीम प्रेमजी
स्कूल, दिनेशपुर,
ऊधमसिंह नगर,
उत्तराखण्ड

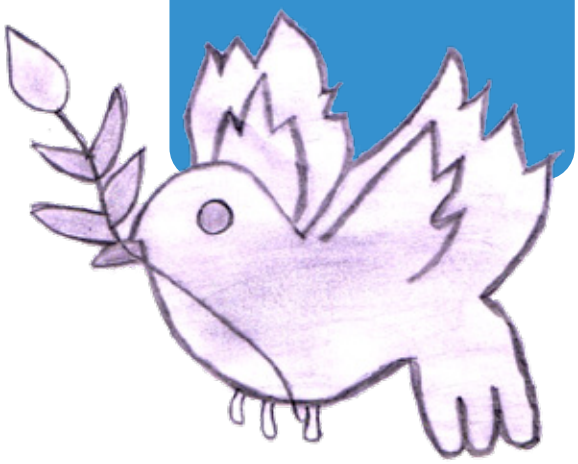

चित्र: अपर्णा सिंह, छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

मेरे प्यारे किसान भाई,

आप लोगों ने अपने गाँव और गाँव की नदी को बहुत गन्दा कर दिया है। जब मैं आपके गाँव के ऊपर से अपने बच्चों के साथ गुज़रती हूँ तो बहुत बदबू आती है। जब हम पशु-पक्षी उस नदी का पानी पीते हैं तो हम बीमार हो जाते हैं। आप लोगों की तरह हमारे पास कोई डॉक्टर नहीं हैं, जो हमारा इलाज कर सके। इसलिए आप अपने गाँव और नदी को साफ-सुथरा रखें। बस मुझे इतना ही कहना था।

धन्यवाद
आपके खेत में आने वाली
चिड़िया

प्रिय चिड़िया बहन,

तुमने मुझे पत्र के द्वारा जो सूचना दी उसके लिए धन्यवाद!

हम अपनी गलती को सुधारेंगे। हमें नहीं पता था कि तुम लोगों के पास इलाज करने को कोई डॉक्टर नहीं होता है। मैं गाँववालों से नदी को साफ-सुथरा रखने को बोलूँगा ताकि किसी भी पशु-पक्षी को नुकसान न हो। मैं गाँववालों के साथ मिलकर नदी को साफ करने के अलावा पक्षियों के लिए पानी रखने की व्यवस्था भी करूँगा। अच्छा अब जा रहा हूँ खेत पर। आगे भी पत्र लिखते रहना।

तुम्हारा किसान भाई

चित्र: निखिल, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, झिरन्या, खरगौन, मध्य प्रदेश

चित्र: समीर खान, ग्यारह साल, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: इमरान, छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

किसान भाई,

तुम कैसे हो? मैं तुम्हारे खेत का अनाज चुगती हूँ। मीठी बोली में गाती भी हूँ। तुम्हारे शरारती बच्चे मुझे पत्थर मारते हैं। मैं तुम्हें एक ज़रूरी सूचना देना चाहती हूँ। जहाँ तुम्हारे मीठे-मीठे अमरूद का पेड़ है ना, वहाँ एक साँप रहता है। तुम और तुम्हारे बच्चे वहाँ मत जाना, वरना साँप तुमको डस सकता है।

चलो, ठीक है कल मिलते हैं खेत में...

तुम्हारे खेत की
चिड़िया

मेरी प्यारी चिड़िया,

आशा करता हूँ तुम ठीक होगी। मुझे सूचित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। और मुझे माफ करना। मैं अपने बच्चों को समझाऊँगा कि तुम्हें ना मारें। मेरे खेत में गाने के लिए धन्यवाद।

अच्छा, तो तुम ही हो वह चोर जो अमरूद खाने आती थी। वहाँ जो साँप रहता था वह मर गया है। तो, तुम अब वहाँ आकर आराम से अमरूद खा सकती हो।

अगली मुलाकात के इन्तज़ार में...

तुम्हारा किसान मित्र

दोनों चिट्ठियाँ: सिमरप्रीत, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

किताबें कुछ कहती हैं...

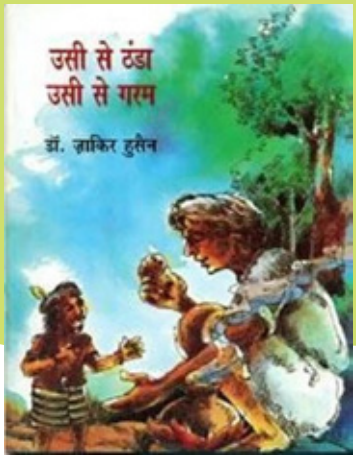

पुस्तक: उसी से ठण्डा उसी से गर्म
लेखक: ज़ाकिर हुसैन
चित्र: पूजा कोटट्नकुलम
समीक्षा: अमित, छठवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

पेड़ हमें काटना नहीं चाहिए। उलटा हम को पेड़ लगाना चाहिए। ठण्ड में मेरी भी उँगलियाँ सुन्न हो जाती हैं। ठण्डी में हम लोग आग जलाते हैं और गर्मी में हम ठण्डा पानी पीते हैं। इस कहानी के चित्र मुझे अच्छे लगे और मुझे पेड़ पर बैठे लोग भी बहुत मज़ेदार लगे। इस कहानी में जो लकड़हारा पेड़ काट रहा है वो मुझको अच्छा नहीं लगा। मुझे समझ नहीं आया ये कैसा जादू है कि एक फूँक मारो तो गर्म और एक फूँक मारो तो ठण्डा। इस रोचक कहानी में एक लकड़हारा अपनी फूँक के जादू से ज़िन्दगी के सच दिखलाता है।

सारा बिलकुल हम-तुम जैसी है। देखो ना उसके हाथ से मम्मी का हार टूट गया है और वह डरकर सच छिपा रही है। पर यह क्या अजीब-सा हो रहा है। उस एक झूठ को छिपाने के लिए उसे कई और झूठ बोलने पड़ रहे हैं। और हर बार जब वह झूठ बोलती है तो उसके मुँह से एक भूत निकलता है। अब इन भूतों से छुटकारा कैसे मिले। इन सारे भूतों को छोड़कर सारा बेल्जियम से आई है, हमसे मिलने।

इस कहानी में हुआ यह कि सारा ने अपनी मम्मी का हार ज़मीन पर गिरा दिया था और झूठ भी बोला था। मुझे यह कहानी अच्छी लगी। मुझे इसके चित्र भी अच्छे लगे।

पुस्तक: सारा और उसके नन्हे भूत
लेखक: थिअर्रे रॉबरेख्त
चित्रकार: फिलिप गूजेंस
प्रकाशक: ए एंड ए बुक्स
समीक्षा: दिव्या, तीसरी, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

इस कहानी की शुरुआत बड़े अच्छे-से की गई है। पर अन्त होते-होते इसमें कुछ स्पष्ट नहीं हुआ। जैसे कि इसमें चर्चा हुई कि राधे के सिर पर साँप कुण्डली मारकर बैठा था। और जब सब ने देखा तब वह साँप फन निकालकर उसे डसनेवाला था। तब उस लड़की ने उसकी टाँगें खींच दीं। तब वह साँप पीछे की ओर फिंका गया और गोदड़ी के नीचे चला गया। राधे की पीठ छिल गई पर उसकी जान छूटी।

उन्होंने अन्त में यह भी लिखा था कि वह साँप उन्हें नुकसान पहुँचाने नहीं आया था, बल्कि वो लोग जहाँ आराम कर रहे थे। वहाँ साँप का घर था। मुझे समझ नहीं आया कि अगर वह नुकसान नहीं पहुँचाने वाला था तो वह डसनेवाला क्यों था। जब उन लोगों ने साँप को ढूँढने की कोशिश की तब अँधेरे के कारण वह साँप उन्हें नहीं मिला। तब सबने आग जलाई। तब उन्हें पता चला कि जहाँ पर वह लोग आराम कर रहे थे वहाँ साँप का घर था। इस कहानी की सबसे खास बात यह थी कि इसमें एक बड़ी घटना को एक छोटी कहानी के रूप में दर्शाया गया है।

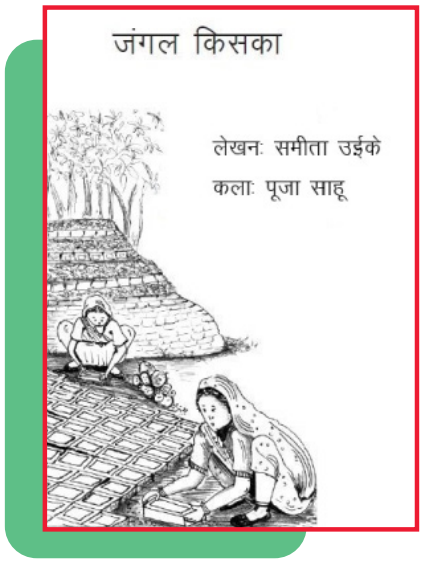

पुस्तक: जंगल किसका
लेखक: समिता उइके
कला: पूजा साहू
प्रकाशक: मुस्कान
समीक्षा: आकृति राज
किलकारी बाल भवन, पटना

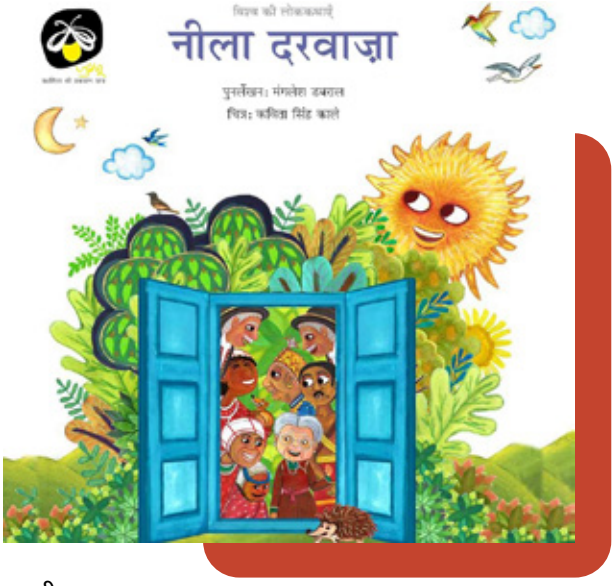

नीला दरवाज़ा
लेखक: मंगलेश डबराल
चित्रकार: कविता सिंह काले
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
समीक्षक: वैष्णवी कुमारी
किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

नीला दरवाज़ा किताब में अनेक लोककथाएँ हैं, जैसे कि 'लोहे का आदमी और लोहार', 'चिड़िया और इन्द्रधनुष' आदि। मैंने 'मंका की चतुराई' और 'पत्थर का सूप' पढ़ी। शीर्षक की तरह ही यह कहानियाँ भी मज़ेदार हैं। इन्हें पढ़ने में बहुत आनन्द आया। मंका की चतुराई कहानी में मंका की चार-पाँच चतुराइयाँ पढ़ने को मिलीं। तो वहीं पत्थर का सूप जैसा शीर्षक है वैसी ही लाजवाब रचना है। इसे पढ़ते हुए ऐसा लगा जैसे कि मैं इसी में खो गई हूँ और सूप पी रही हूँ।

ऐसे ही बोर न करने वाली लोककथाओं की और भी किताबें लिखी जानी चाहिए।

छात्रावास

नमन जैन
आठवीं, द सिंधिया स्कूल
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

कौन कहता है छात्रावास उदास है
हमारी हर अदा में उसका हाथ है
भरपूर दोस्त बनाते हैं
साथ खाते, साथ खेलते
साथ में हँसते-गाते हैं
जब शिक्षक डाँटकर चुप कर देते
बहला-बहलाकर खुश कर देते
दोस्त हमारे ऐसे हैं
जब रोते-रोते आते हैं
तो वही दोस्त
दिल बहलाते हैं
सारी खुशियाँ, सारे दुख
हम साथ-साथ मनाते हैं
ढेर सारी यादें बोर्डिंग की
घर लेकर जाते हैं

चित्र: अंश, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: वर्षा यादव, आठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भरगदा, केसला, मध्य प्रदेश

मक्का के बड़े

मोनिका यादव
आठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भरगदा, केसला, मध्य प्रदेश

ज़रूरी चीज़ें: तेल, जीरा, हल्दी, हरी मिर्च, गरम मसाला, लाल मिर्च, प्याज़, मक्के के दाने, नमक, बेसन, धनिया

विधि: पहले मक्के के दानों को पीस लो। फिर उसमें जीरा, हल्दी, नमक, हरी मिर्च, लाल मिर्च और प्याज़ सब मिला लो। इसमें थोड़ा-सा बेसन मिला लो। अब इसमें पानी डालकर घोल तैयार कर लो। फिर गैस में कहाड़ी रखकर उसमें तेल डालो। हथेली पर थोड़ा-सा पानी लगाकर छोटे-छोटे बड़े बना लो। और फिर तल लो। बस हो गए बड़े बनकर तैयार।

गुलाब जामुन

साक्षी यादव
नौवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भरगदा, केसला, मध्य प्रदेश

ज़रूरी चीज़ें: पानी, शक्कर, इलायची, मावा, मैदा, दूध और घी

विधि: पहले कहाड़ी रखकर गैस जला दो। अब उसमें पानी, शक्कर, इलायची डालकर धीमी आँच पर रख दो। और इसे बीच-बीच में चलाते रहो। आधे घण्टे में चाशनी तैयार हो जाएगी। इसे साइड में रख दो। अब एक परात में मावा लो और इसमें मैदा डालकर इसे मस लो। इसे आटे की तरह नरम कर लो। अब इसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर घी में तल लो। फिर इनको चाशनी में डाल दो। हो गए गुलाब जामुन तैयार।

दोनों चित्र: रिवा, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

मेरी चिट्ठी

मेरी प्यारी गेंद,

तुम कैसी हो? तुम घर कब आ रही हो? तुम्हारा लाल और हरा रंग मुझे बहुत पसन्द है। जब तुम घर पर होती हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। वैसे मेरा दोस्त तुम्हारा अच्छा खयाल रखता होगा। मैं तुम्हें लेने जल्दी ही आऊँगा।

तुम्हारा दोस्त
अतुल
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी
बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

चित्र: सोनम बानो, छठवीं, कम्पोज़िट स्कूल धौरहरा, लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश

प्रिय पेड़,

आशा है कि पंछियों का तुम्हारी डाली पर घर बनाना, उनकी चहचहाहट, गिलहरियों का उतरना-चढ़ना तुम्हें मोहित करता होगा। इस साल तुम्हारे हरे, घने पत्ते तुम्हारी अच्छी सेहत को दर्शा रहे हैं। तुम्हारे फलों को तो पंछी इतना तोड़ लेते हैं कि हमें फल देखने को ही नहीं मिलते। गर्मी में तुम्हारे घने पत्ते हमें छाया देते हैं।

तुम तो देख ही रहे होगे कि लोग अपने हित के लिए बड़ी मात्रा में पेड़ों की कटाई कर रहे हैं। मैं भले ही उन पेड़ों को कटने से नहीं बचा पाई, पर तुम्हें बचाने का प्रयास मैं करूँगी।

तुम्हारी मित्र
मुक्ता
नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

चित्र: मोहित, दूसरी, रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल, दतिया, मध्य प्रदेश

चित्र: दिवाकर कुमार, पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

प्रिय मित्र बादल,

आशा करती हूँ कि तुम अच्छे होगे। सच बताऊँ तो पता ही नहीं चलता कि तुम्हारा असली रूप कौन-सा है? सुबह और शाम वाला जब तुम नारंगी दिखते हो, दोपहर वाला जब तुम थोड़ा सफेद और थोड़ा नीले नज़र आते हो या जब बारिश में तुम थोड़ा काले और थोड़ा बैंगनी नज़र आते हो। हम अक्सर तस्वीरों में देखते हैं कि तुम लाल-नारंगी रंग के हो, तुमसे गुज़रते हुए कुछ पंछी हैं। जब मैं तुम्हें इस रूप में वास्तव में देखती हूँ तो बहुत अच्छा लगता है।

जिस तरह हम मैदान में पकड़म-पकड़ाई का खेल खेलते हैं, उसी तरह तुम भी अपने कुछ बादल दोस्तों के साथ खेलते नज़र आते हो। एक-दूसरे को पकड़ने के लिए इधर-उधर भागते हो। और जब आपस में टकरा जाते हो तो वहीं पर पानी बनकर बरसने लगते हो। तुम्हारे द्वारा बरसते पानी में भीगने में हमें बहुत मज़ा आता है। हम कागज़ की नाव बनाकर पानी में बहाते हैं।

तुम्हारी दोस्त
साक्षी

आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

गौल आया लक्ष्मी आश्रम में...

कनिष्का अधिकारी
ग्यारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

आजकल हमारे आश्रम में एक डरावना जानवर आ रहा है। हमारे आश्रम में लोग अलग-अलग जगहों से आए हैं। कुछ ठण्डी जगहों से आए हैं तो कुछ गरम जगहों से। ठण्डी जगहों से आए लोगों ने इस जानवर को कभी नहीं देखा। जो गरम इलाकों से आए हैं उन्होंने इसे पहले देखा है।

उनका कहना है कि इसकी पूँछ बहुत ही धारदार होती है और इसकी लार में ज़हर होता है। अगर इस जानवर ने अपना मुँह खोला तो यह फूँक मारेगा जिससे ज़हर बाहर आएगा। अगर सामने कोई इन्सान हो और उसके ऊपर इसका ज़हर चला जाए तो वह मर भी सकता है। यह सारी बातें सुनकर सब लोग डर गए। जब मैंने इसे अपनी आँखों से देखा तो मुझे भी यह बहुत डरावना लगा।

इसका स्थानीय नाम गौल है। यह बहुत ही बड़ा है। इसका रंग भूरा (मटमैला) है। और वैसे तो यह छिपकली जैसा है पर छिपकली का बड़ा रूप है। हमारे बाबूजी ने इसके बारे में इंटरनेट पर खोजा तो उसमें इसका नाम दिया था — मॉनिटर लिजार्ड। यह अधिकतर गरम जगहों पर दिखता है। पर कौसानी ठण्डी जगह है। इसकी ऊँचाई 1800 किलोमीटर है। शायद ये गौल इसलिए यहाँ आया होगा क्योंकि पिछले कुछ दिनों में तापमान बहुत बढ़ गया था। जब से लगातार बारिश हुई है तब से ये नहीं दिखाई दिया।

मेरी चिट्ठी

प्रिय बड़े भाई,

नमस्ते। मुझे तुमसे कहना है कि तुम घर कब आओगे। तुम्हारी याद हमें रुलाती है। तुम अपनी पढ़ाई जल्दी खतम करके हमारे पास आ जाओ। मुझे और माँ-पापा को तुम्हारी बहुत ही याद आती है। तुम वहाँ की अच्छी से अच्छी चीज़ें मेरे लिए खरीदकर लाना। मुझे वहाँ का कपड़ा बहुत पसन्द आता है। तो मेरे लिए एक कपड़ा ले आना।

तुम्हें पता नहीं होगा कि कल बड़े पापा के बेटे के विवाह के लिए लड़की देखने जा रहे हैं। उन्होंने पापा को भी बोला है। और विवाह होने से पहले ही उन्होंने आपको बुलाने का न्यौता भी दिया है। और खुशी तो और एक बात की है। जब तुम पिछली बार घर आए थे ना तो मैंने तुम्हारे बैग में एक छोटा वाला खिलौने का कुत्ता डाला था। वैसा ही पापा ने मुझे नया वाला दिलाया है। तुम आए थे तो मैंने बहुत ही मज़े किए थे। इस बार भी तुम आओगे तो मैं बहुत मज़े करूँगा।

तुम्हारा छोटा भाई
कुणाल बेर
सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी
छत्तीसगढ़

चित्र: रोशनी कुमारी, सातवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

प्रिय बहन,

तुम्हारी बहुत याद आती है। जब से तुम्हारी शादी हुई है तब से तुम मेहमान बनकर आती हो। और कुछ दिन ही रुक पाती हो हमारे पास। हमारी पुरानी यादों को याद करके मुझे तो आज आँसू आ गए। अभी राखी के त्यौहार पर तुम आई थीं, पर दो-चार दिनों में चली गईं। मैं चाहती हूँ कि तुम जल्दी से घर आ जाओ। मम्मी-पापा से मिलो और मुझसे भी। उम्मीद करती हूँ तुम अपना ज़रूरी काम छोड़कर कुछ दिन के लिए आओगी।

मिस यू दीदी।
तुम्हारी प्यारी बहन
अंजली
बारहवीं, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जामनोद, देवास, मध्य प्रदेश

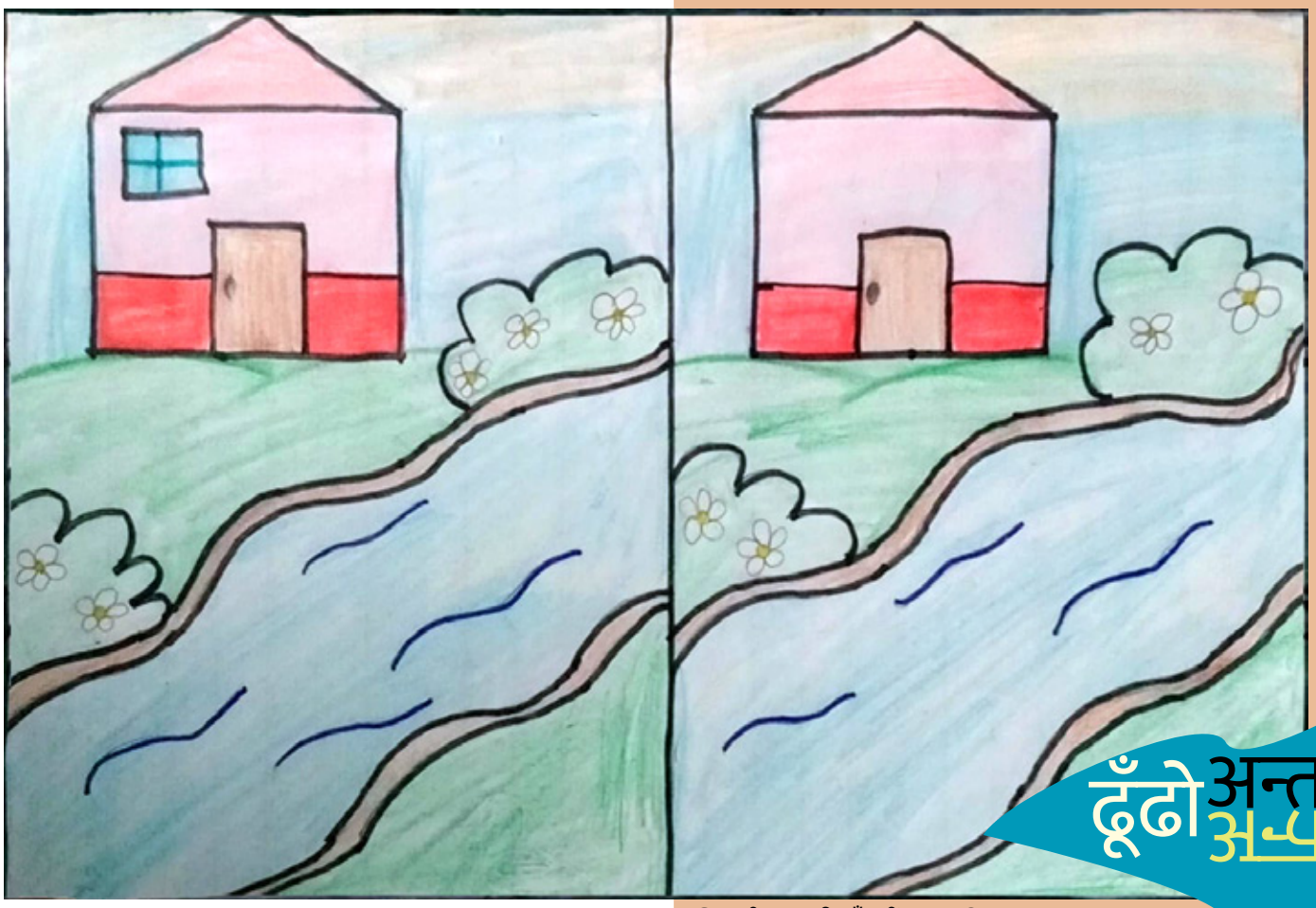

ढूँढो अन्तर

चित्र: पीहू कुमारी, पाँचवीं, पटना, बिहार

जयन्ती फर्स्वाण, ग्यारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

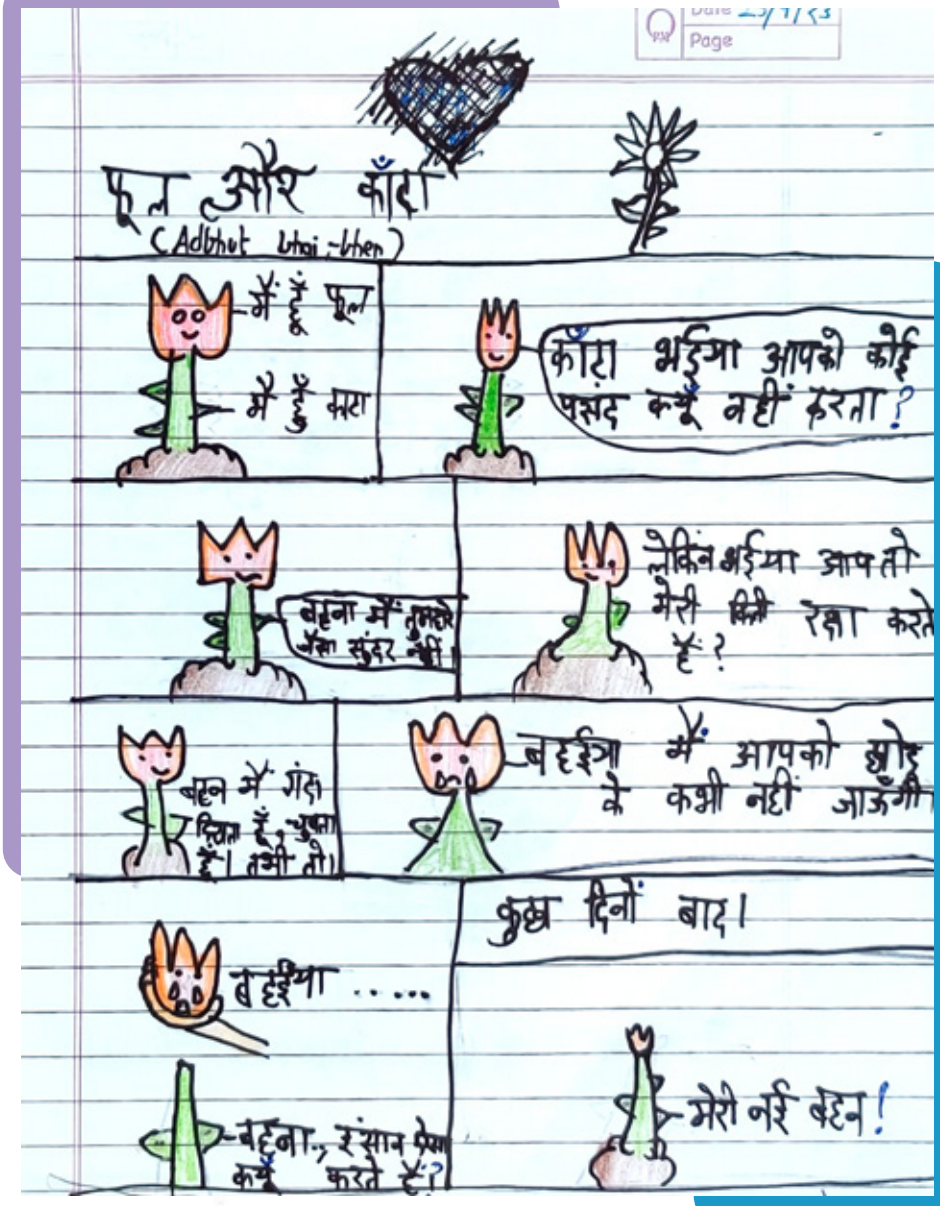

चित्र: कृषव अग्रवाल, छठवीं, दि सिंधिया स्कूल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

चित्र: हसनैन शेख, छह साल, केन्द्रीय विद्यालय, बड़वानी, मध्य प्रदेश

चित्र: नव्या ज़ुबिन, बाल भवन बड़ौदा, गुजरात

मेरी प्यारी दीदी,

मेरे को आशा है कि आपको लन्दन में मज़ा आ रहा है। कृपया करके अपना मास्टर्स जल्दी खतम करके वापिस आएँ। लेकिन अच्छी बात है कि आपका कमरा अब मेरा है।

फ्रॉम
मिशिका गुप्ता
चौथी, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मेरे प्यारे पापा,

प्रणाम।

आप कैसे हो? आप सऊदी अच्छे-से पहुँच गए? मम्मी कहती हैं सऊदी बहुत दूर विदेशमें है। पर आप मुझे हमेशा पास ही लगते हो।

आप जब घर आते हो तो सबसे ज़्यादा खुश मैं होता हूँ। आपके साथ खेलना-खाना और मन लगाकर पढ़ाई करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। वैसे तो मम्मी मेरा बहुत खयाल रखती हैं। पर जब कहीं जाना होता है तो मम्मी आपकी तरह मोटरसाइकिल से नहीं ले जातीं। शायद उन्हें मोटरसाइकिल चलाना नहीं आता है। पैदल चलने से मेरा पैर दर्द करता है। तभी मुझे आपकी बहुत याद आती है। आप जल्दी से घर आ जाओ।

आपका बेटा
रितिक
दस साल, ग्राम रुइयाँ, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: अमनदीप, छठवीं, मोहाली, चण्डीगढ़, पंजाब (स्लैमआउट लाउड संस्था से प्राप्त)

1.

क्या तुम माचिस की एक तीली को इधर-उधर करके और एक तीली को हटाकर इस समीकरण को सही कर सकते हो?

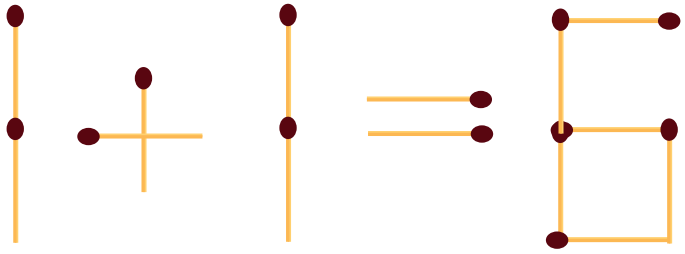

2.

दी गई ग्रिड में 1 से 8 तक की संख्याएँ इस तरह भरनी हैं कि किन्हीं भी दो खानों (आड़े, खड़े या तिरछे) में क्रम से आने वाली दो संख्याएँ एक साथ ना आएँ।

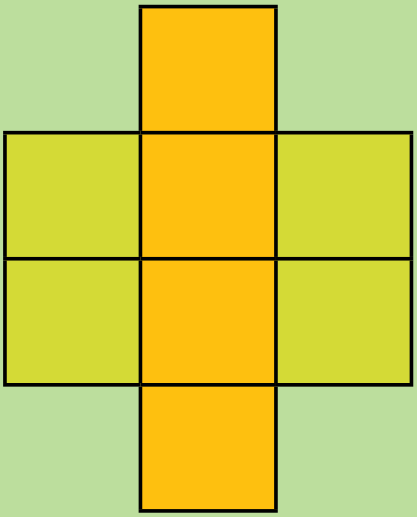

3.

एक औरत के कुछ बेटे थे। जब भी कोई उससे पूछता कि उसके कितने बेटे हैं, तो वो तीन वाक्यों में जवाब देती:

- मेरे सारे बेटों के बैंगनी बाल हैं, दो को छोड़कर।
- मेरे सारे बेटों के गुलाबी बाल हैं, दो को छोड़कर।
- मेरे सारे बेटों के नीले बाल हैं, दो को छोड़कर।

क्या तुम बता सकते हो कि उसके कितने बेटे हैं?

यह सवाल उत्तर प्रदेश के नोएडा शहर के शिव नाडर स्कूल की पाँचवीं कक्षा की छात्रा अभिज्ञा दुबे ने भेजा है।

4.

इनमें से कौन-सी संख्या बाकी सबसे अलग है और क्यों?

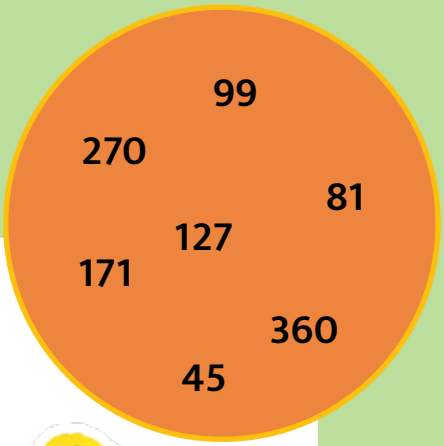

5.

दी गई ग्रिड में कई सारे पकवानों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

कु	बि	खी	मा	स	मा	ल	पु	आ
इ	म	र	ती	ल	मो	मो	ला	म
ड	पु	पा	या	ना	डो	सा	सैं	ले
ली	ला	फि	र	नी	कि	सें	ड	ट
घे	व	र	व	ड़ा	पा	व	वि	र
ला	नी	र	स	म	ला	ई	च	चा
प	के	क	लि	न	क	लि	या	ऊ
लि	कौं	चौं	दा	ल	बा	टी	टा	मी
सु	रा	ड़ी	गु	ला	ब	जा	मु	न

6. मेज़ पर छह गिलास रखे हैं। तीन भरे हुए और तीन खाली। केवल एक गिलास को इधर-उधर करके तुम्हें गिलासों को इस क्रम में जमाना है कि हर दूसरा गिलास खाली हो। कैसे कर सकते हैं?

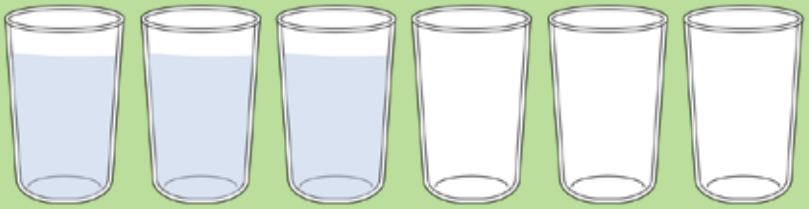

7. एक गुब्बारे वाला छोटा गुब्बारा 5 रुपए में और बड़ा गुब्बारा 20 रुपए में बेचता है। ज़ारा ने उसे 20 रुपए दिए। और गुब्बारे वाले ने बिना पूछे उसे बड़ा गुब्बारा दे दिया। अंशुल ने भी उसे 20 रुपए दिए। पर उसने अंशुल से पूछा कि उसे कौन-सा गुब्बारा चाहिए। गुब्बारे वाला दोनों में किसी को भी पहले से नहीं जानता था, तो फिर उसे कैसे पता चला कि ज़ारा को कौन-सा गुब्बारा चाहिए था?

8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग जानवर की तस्वीर आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी तस्वीरें आएँगी?

फटाफट बताओ

गोल-सा दिखता हूँ
डिब्बे में आता हूँ
ऑर्डर कर घर पहुँच जाता हूँ
टुकड़ों में खाया जाता हूँ

(पिज़्ज़ा)

रिया, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक शाला, जोग्यूरा, खुर्पाताल, नैनीताल, उत्तराखण्ड

मोटा-मोटा मैं हूँ
नाक में पानी भरता हूँ
बड़े-बड़े मेरे कान हैं
बताओ मैं कौन हूँ?

(हिप्पो)

चन्दा के साथ आते हैं
रात में छा जाते हैं
छोटे-छोटे दिखते हैं
बताओ क्या कहलाते हैं?

(ग्रह)

गोल-मटोल दिखता हूँ
बटन दबाओ तो रोशनी लाता हूँ
अँधेरे से बचाता हूँ
बताओ मैं कौन हूँ?

(ब्लब)

तीनों पहेलियाँ: हर्षिता कनवाल, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक शाला, जोग्यूड़ा, खुर्पाताल, नैनीताल, उत्तराखण्ड

जवाब पेज 86 पर

टूटी, फटी, फीकी, मरी और भूतनी!

अनुष्का उईके
आठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर
ग्राम कोटमीमाल, केसला, मध्य प्रदेश

एक परिवार में पाँच बहनें थीं। एक का नाम था टूटी। दूसरी का नाम था फटी। तीसरी का नाम था फीकी। चौथी का नाम था मरी। और पाँचवीं का नाम था भूतनी। एक दिन उनके घर पर लड़की देखने वाले आए। मम्मी ने उनसे पूछा, “आप कुर्सी पर बैठोगे या चटाई पर?” तो मेहमान ने कहा, “कुर्सी में।” तो माँ ने कहा, “टूटी कुर्सी ले आओ।” यह सुनकर मेहमान बोले, “नहीं, नहीं, हम तो चटाई पर बैठ जाएँगे।” तो मम्मी बोलीं, “फटी चटाई ले आओ।” तो मेहमान बोलें, “अरे! कोई नहीं। हम तो ज़मीन पर ही बैठ जाएँगे।” फिर मम्मी बोलीं, “आप चाय पियोगे या दूध?” तो मेहमान बोले, “चाय।” मम्मी बोलीं, “फीकी चाय ले आओ।” तो मेहमान बोले, “नहीं, नहीं रहने दो। हम तो दूध ही पी लेंगे।” तो मम्मी बोलीं, “मरी भैंस का दूध ले आओ।” तो मेहमान बोले, “नहीं रहने दीजिए। हम कुछ नहीं खा रहे। हमें तो सिर्फ लड़की दिखा दो।” तो मम्मी बोलीं, “बेटी भूतनी को लेकर आओ।” यह सुनकर मेहमान बेहोश हो गए।

चित्र: कुन्ती पैकरा,पाँचवीं, प्राथमिक कन्या शाला आश्रम, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

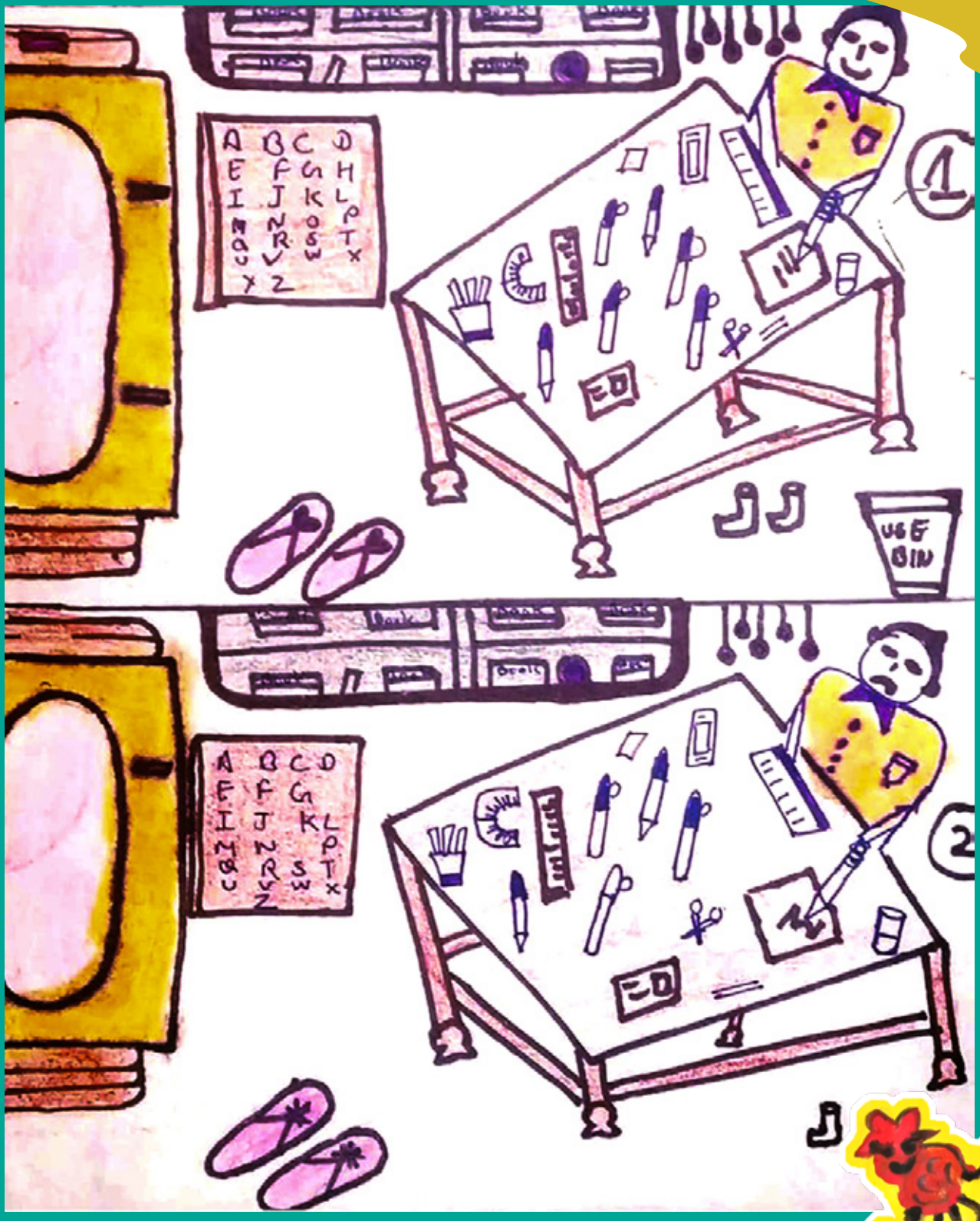

चित्र: कृष्णा, अठारह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली

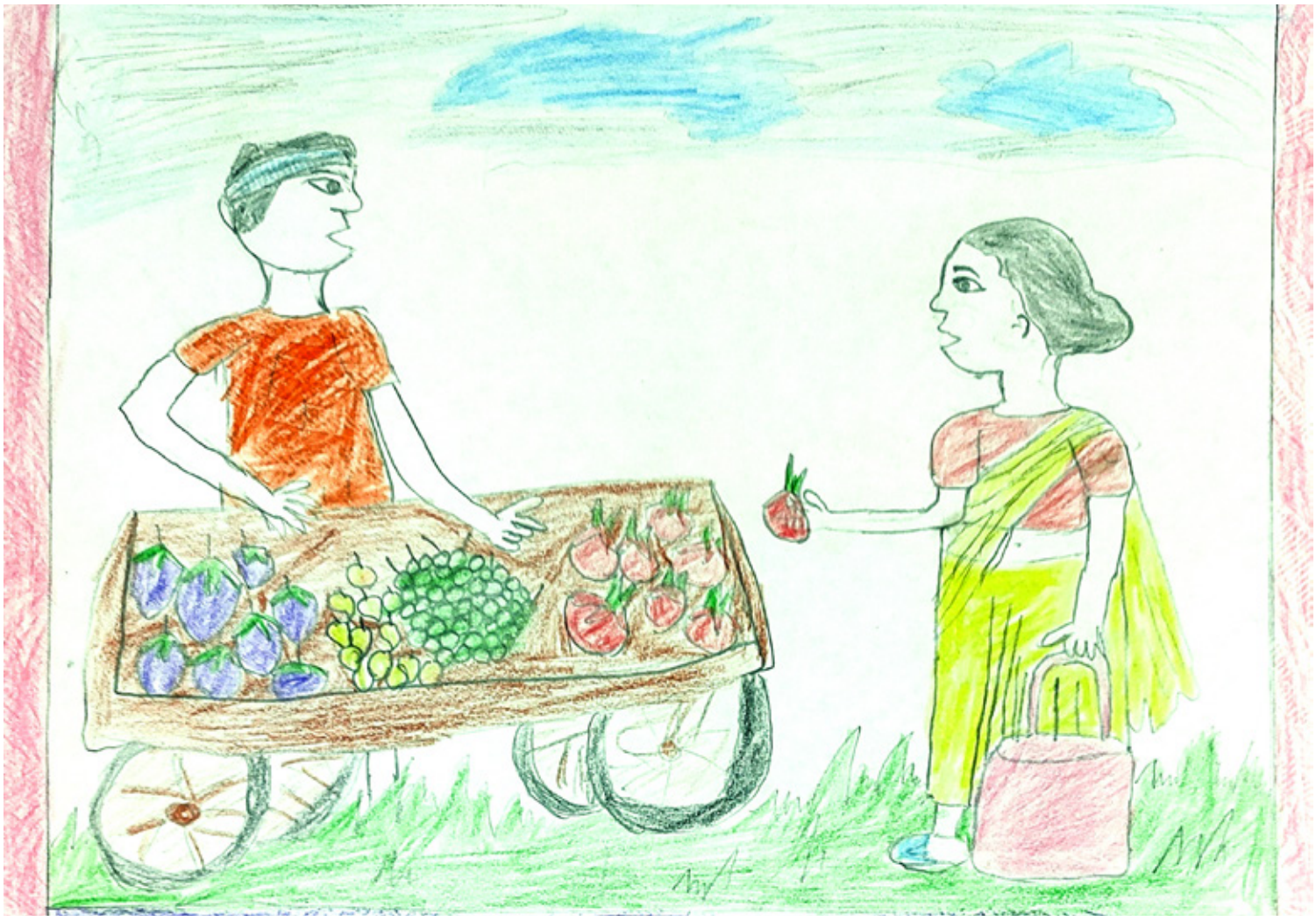

चित्र: अमिस्ता केरकेट्टा, पाँचवीं, प्राथमिक शाला कन्या आश्रम, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

हमारा ठेला

कल्पना मिश्रा
सातवीं, कम्पोज़िट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर
उत्तर प्रदेश

एक रात हम लोग अपने-अपने कमरे में सो रहे थे। मेरे बड़े पापा बाहर बरामदे में सो रहे थे। रात के लगभग 2 बज रहे थे। हमारा ठेला घर के बाहर खड़ा था। दो चोर आए और ठेला चोरी करके ले गए। कुछ आहट हुई जिससे मेरे बड़े पापा की आँख खुल गई। उन्होंने देखा कि ठेला बाहर नहीं है। उन्होंने पापा को जगाया। वे दोनों टॉर्च लेकर ठेला बाहर ढूँढने लगे।

उन्हें दूर-दूर तक चोर नहीं मिले। कोई भी नहीं दिखा। मेरी मम्मी और दादी आँगन में थीं। तब तक हम लोग भी जाग गए। मैंने घर के पीछे वाला दरवाज़ा खोला तो देखा कि गली में कोई खड़ा था। मैंने एक ईंटा उठाकर उधर फेंका। वो चोर ही थे। वहीं ठेला भी था। वे ठेला छोड़कर भाग गए। मैं ठेला धकेलकर घर की ओर ला रही थी। तब तक पापा भी लौट आए।

मुझे ठेले के साथ देखकर बहुत खुश हुए। इस सब में सुबह के चार बज गए। मैं पसीने से भीग गई थी। माँ ने गुड़ घोलकर शरबत बनाया। हम सबने शरबत पिया।

बाजार

मैं सबसे पहले मैं उठती हूं फिर नहाने जाती हूं उसके बाद तीन चार बजने का इंतिजार करती हूं तीन चार बज जाता है तो मैं तैयार होती हूं फिर साइकिल में मैं और मेरे दोस्त के सात बाजार जाती हूं बाजार पहुंचने के बाद वहां सामान - सब्जी, करेला, प्याज, चप्पल, बर्तन, चूड़ी, काजल, आईलाईनर, लिबिस्टिक, मेकप किट, पाउडर, क्रीम, पायल, बोतल, छोला, टमाटर, लाल भाजी, गुपचुप, समोसा, बेचते रहते है। हम सब्जी खरीदते है लिबिस्टिक मेकप किट, गुपचुप, छोला खाते है। फिर साइकिल में घर चले आते है।

चित्र: नन्दिनी टोप्पो, पाँचवीं, प्राथमिक शाला कन्या आश्रम, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

चित्र: प्रोमिता बरोई, दसवीं, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कदमतला, मध्य अंडमान, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

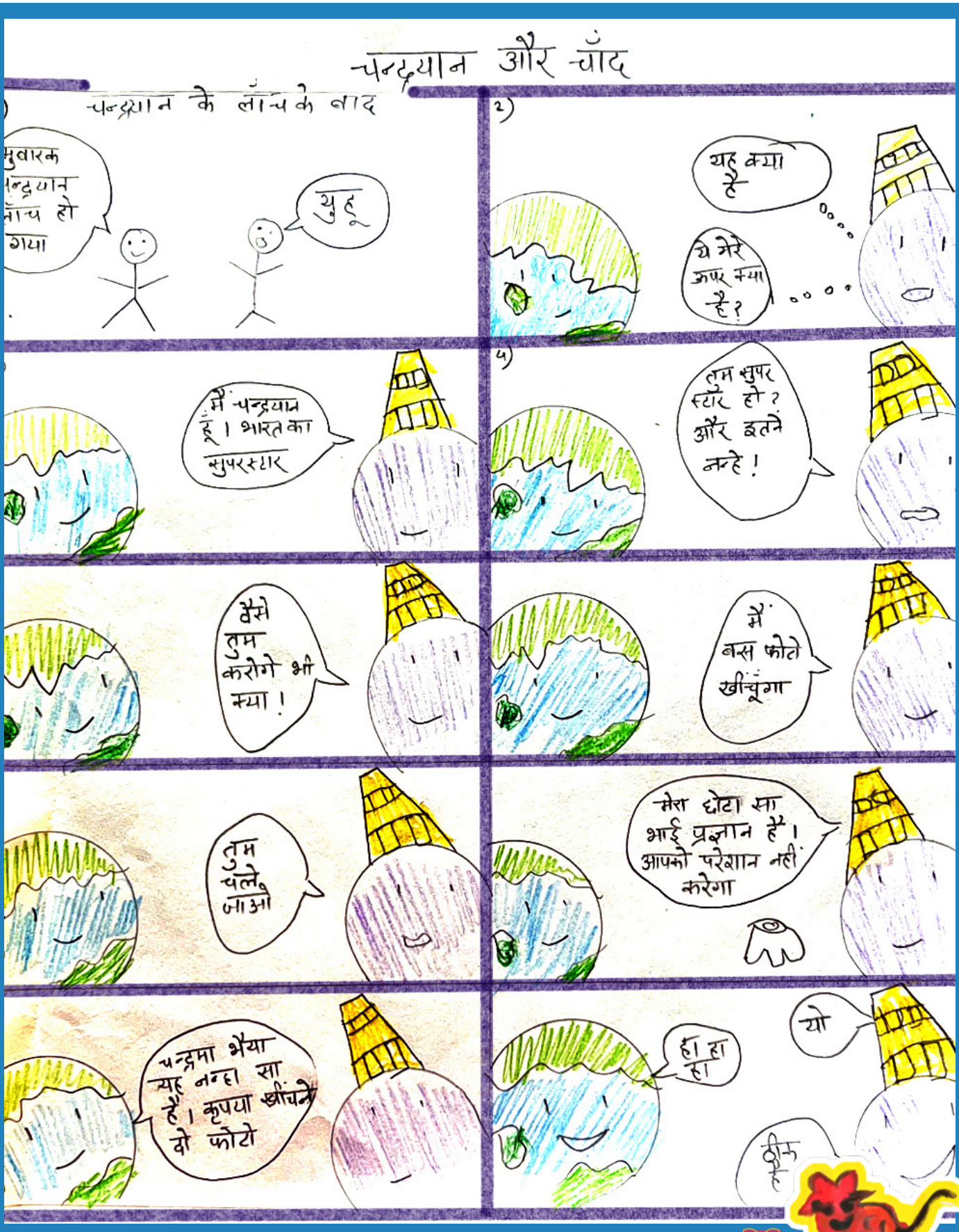

कहानी व चित्र: अविराज, चौथी, कॉर्बेट, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

पीदू और पीदन

भानुप्रिया
बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, स्यांजी, मण्डी
हिमाचल प्रदेश

किसी गाँव में एक पीदू और पीदन रहते थे। वह बहुत लालची थे। एक दिन उन्होंने भल्ले खाने का प्रोग्राम बनाया। पर भल्ले बनाने के लिए उनके पास लकड़ी नहीं थी।

पीदू लकड़ी लाने जंगल में गया। वहाँ उसे टूड़ी राक्षस मिला। उसने पूछा, "भाई तुम्हारा नाम क्या है?" उसने बोला, "मेरा नाम टूड़ी राक्षस है।" फिर टूड़ी राक्षस ने उसका नाम पूछा। तो उसने अपना नाम पीदु बताया। फिर टूड़ी राक्षस ने पूछा, "तुम इस जंगल में क्या कर रहे हो? तो उसने कहा, "मेरी पत्नी को भल्ले खाने की इच्छा कर रही है। और हमारे पास लकड़ियाँ नहीं हैं। इसलिए मैं लकड़ी की खोज में जंगल में निकल पड़ा।" यह सुनकर टूड़ी राक्षस बोला, "मुझे भी भल्ले खाने हैं।" तो पीदु बोला, "जब बहुत सारा धुआँ निकलते हुए दिखे तो तुम भल्ले खाने आ जाना।"

फिर पीदु घर पहुँचा। उसने सारी बात अपनी पत्नी को बताई। फिर उन्होंने भल्ले बनाना शुरू किया। और वह भल्ले खाकर एक हांडी में छिप गए। और टूड़ी राक्षस के लिए लैट्रिन तथा गोबर के भल्ले कढ़ाही में रख दिए। फिर पीदु ने कहा, "मेरे पेट में गैस हो रही है।" पीदन ने कहा, "गैस आराम से छोड़ना।" पीदु ने गैस आराम से छोड़ी। फिर पीदुन बोली, "अब मेरे पेट में गैस हो रही है।" फिर पीदु बोला, "गैस आराम से छोड़ना।" पर उसकी पत्नी ने गैस ज़ोर-से छोड़ी। इस कारण हांडी टूट गई। और वो दोनों लैट्रिन के भल्ले वाली कहाड़ी में जाकर गिर गए।

चित्र: कृष्णा, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

बन्दरों का आतंक

सोनिया आल्मया
ग्यारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

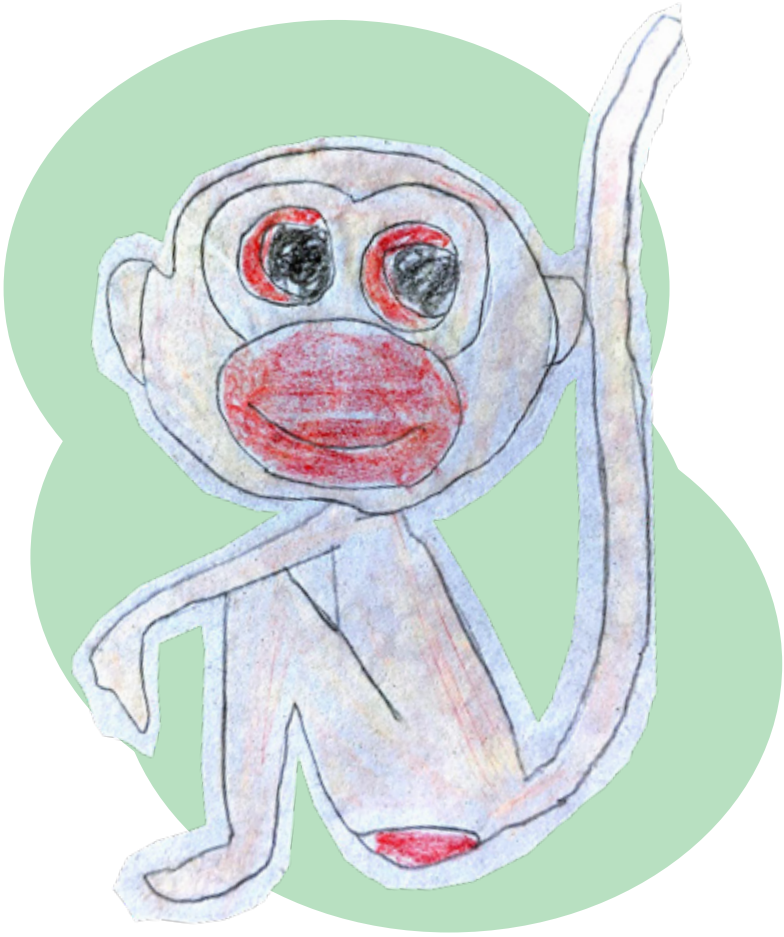

चित्र: युवराज मालवीय, सातवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भरगदा, केसला, मध्य प्रदेश

कौसानी लक्ष्मी आश्रम में बन्दरों ने बहुत ही आतंक मचा रखा है। पहले आश्रम में इतने बन्दर नहीं थे, जितने अब आ रहे हैं। इस कमरे से उस कमरे में घूमते रहते हैं। बहुत ही परेशान कर रखा है। रविवार को हम बच्चों को मूँगफली मिलती है वो भी बन्दर ले जा रहे हैं। बन्दरों को डराने के लिए भिसुड़ों को बनाया गया। पहले पहल तो भिसूड़ को देखकर डरे, पर अब उसको देखकर भी नहीं डर रहे हैं। सीधे बगीचे में जाकर ककड़ियों से अपना पेट भर रहे हैं।

एक दिन बड़ा मज़ेदार किस्सा हुआ। मैंने खाना बनाना था। खाना बनाने के बाद मैं और मेरी सहेली बाहर रसोई में आराम से बैठकर गाना गा रहे थे। अन्दर से कुछ तो आवाज़ आ रही थी। पर हमको लगा अन्दर दीदी दाल खिरोल रही होंगी। पर वहाँ दीदी नहीं थीं। वहाँ तो दो बन्दर थे जो आराम से चावल खा रहे थे। मुझे और मेरी सहेली को बहुत ही हँसी आ गई। मैं सोच रही थी कि अगर वो दाल की कढ़ाई में डूब जाता तो कल से उसका आना बन्द हो जाता।

प्रिय रस्किन बॉन्ड,

आप कैसे हो? मैं आपकी प्यारी-प्यारी किताबें पढ़कर बहुत खुश हूँ। आशा करती हूँ कि आप भी स्वस्थ व खुश होंगे। आपको पता है मैं कौन हूँ। नहीं ना... मैं लक्षिता, बाड़मेर, राजस्थान से। आपको पता है मैं ऐसे बात करना कैसे सीखी। आपकी किताबों से। आपके लिखने का तरीका बहुत अच्छा है। मेरे पास शब्द नहीं हैं आपके बारे में कहने के लिए। इस दुनिया में लाखों लोग हैं जो आपसे मिलना चाहते हैं, आपसे बात करना चाहते हैं। पर ये आसान नहीं है ये मैं जानती हूँ। तो इसीलिए मैंने अपनी बात कहने के लिए आपको ये पत्र लिखा।

पहले मैं जब आपकी किताब देखती थी तो मैं उसे पढ़ती नहीं थी। पर एक दिन मेरे टीचर ने मुझे आपकी एक किताब दी। उस किताब का नाम था — *रस्किन की घर वापसी*। जब मैंने उस किताब का आगे का पन्ना देखा तो डरावना लगा। और जब मैंने उसकी पहली कहानी पढ़ी तो मज़ा नहीं आया। पर जब पढ़ना जारी रखा तो मज़ा आने लगा। यह किताब मेरी ज़िन्दगी से काफी जुड़ती है। मेरी ही क्या शायद सबकी। मेरा आपसे एक सवाल है कि आपकी सामान्य-सी ज़िन्दगी में इतने सारे दोस्त और इतनी सारी घटनाएँ कैसे थीं? मेरे पास तो इतने सारे दोस्त और इतनी सारी घटनाएँ नहीं हैं। मेरे पास कुछ अच्छे दोस्त हैं। पर मुझे भी आपकी तरह बहुत सारे दोस्त चाहिए। मुझे पता है कि उसके लिए मुझे चीज़ों को काफी अच्छे-से गौर करना होगा। मैं आपकी तरह चीज़ों को गौर करने की कोशिश करूँगी।

आपको पता है कि आपकी किताब का पहला पन्ना काफी रोमांचक होता है। किताब को दूर से देखकर ही पढ़ने की इच्छा जाग जाती है। मुझे नहीं पता क्यों पर मेरी दोस्ती बड़ी कठिन है। हम सब छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे से झगड़ना शुरू कर देते हैं। क्या

मेरी चिट्ठी

आपको भी अपनी ज़िन्दगी में ऐसी दिक्कतें आई हैं। अगर हाँ तो आप उन्हें कैसे सुलझाते थे। आपको पता है आपकी कहानियों की वजह से मुझे दोस्तों की और परिवार की एहमियत समझ आई। मुझे आपकी दोस्ती वाली किताबें अच्छी लगती हैं।

अभी मैं आपकी एक किताब पढ़ रही हूँ — *नो मैन इज़ एन आइलैंड*। ये किताब भी दोस्ती के बारे में है। ये एक काफी अच्छी किताब है। मेरे दोस्त मुझे बहुत प्यार करते हैं। वो मेरी पागल-पागल बातें भी सुन लेते हैं। क्या आपके दोस्त भी आपकी बातें सुनते थे? अभी मैंने आपकी ज़्यादा किताबें नहीं पढ़ी हैं। पर जितनी पढ़ी हैं उससे मेरी ज़िन्दगी में कुछ बदलाव आया है। और आशा करती हूँ कि जब मैं आपकी ज़्यादा किताबें पढ़ लूँगी तो अपनी परेशानियों और दिक्कतों से बहुत आसानी से और अलग तरह से लड़ पाऊँगी। आपकी अँग्रेज़ी की किताबों से मेरी अँग्रेज़ी भी अच्छी हो गई है और मेरा बोलना भी अच्छा हो गया है।

कभी-कभी पत्र में कितनी बातें हो जाती हैं ना। कितनी अच्छी बात है ना कि आप हमारी दुनिया में हो। मेरी ज़िन्दगी को थोड़ा-सा भी बदलने के लिए आपका धन्यवाद।

आपकी फैन

लक्षिता

सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

चित्र: अनुभव, नर्सरी 'ए', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

मेरे प्रिय दोस्त,

मुझे तुम बहुत याद आते हो। मुझे याद है जिस दिन मैं अपने परिवार वालों के साथ घूमने गई थी। हम सब पहले बस में बैठे। फिर हम वैष्णोदेवी पहुँचे। वहाँ पर हमने दर्शन किए। फिर हम होटल गए। होटल बहुत बड़ा था। वहाँ पर हर चीज़ मिलती थी। हमने वहाँ पर खाना खाया और फिर फोटो खिंचवाए। खूब धूम मचाई। मुझे तुम हमेशा याद रहते हो। तुम मेरे जीवन का महत्वपूर्ण भाग हो।

तुम्हारी दोस्त

रश्मि

पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

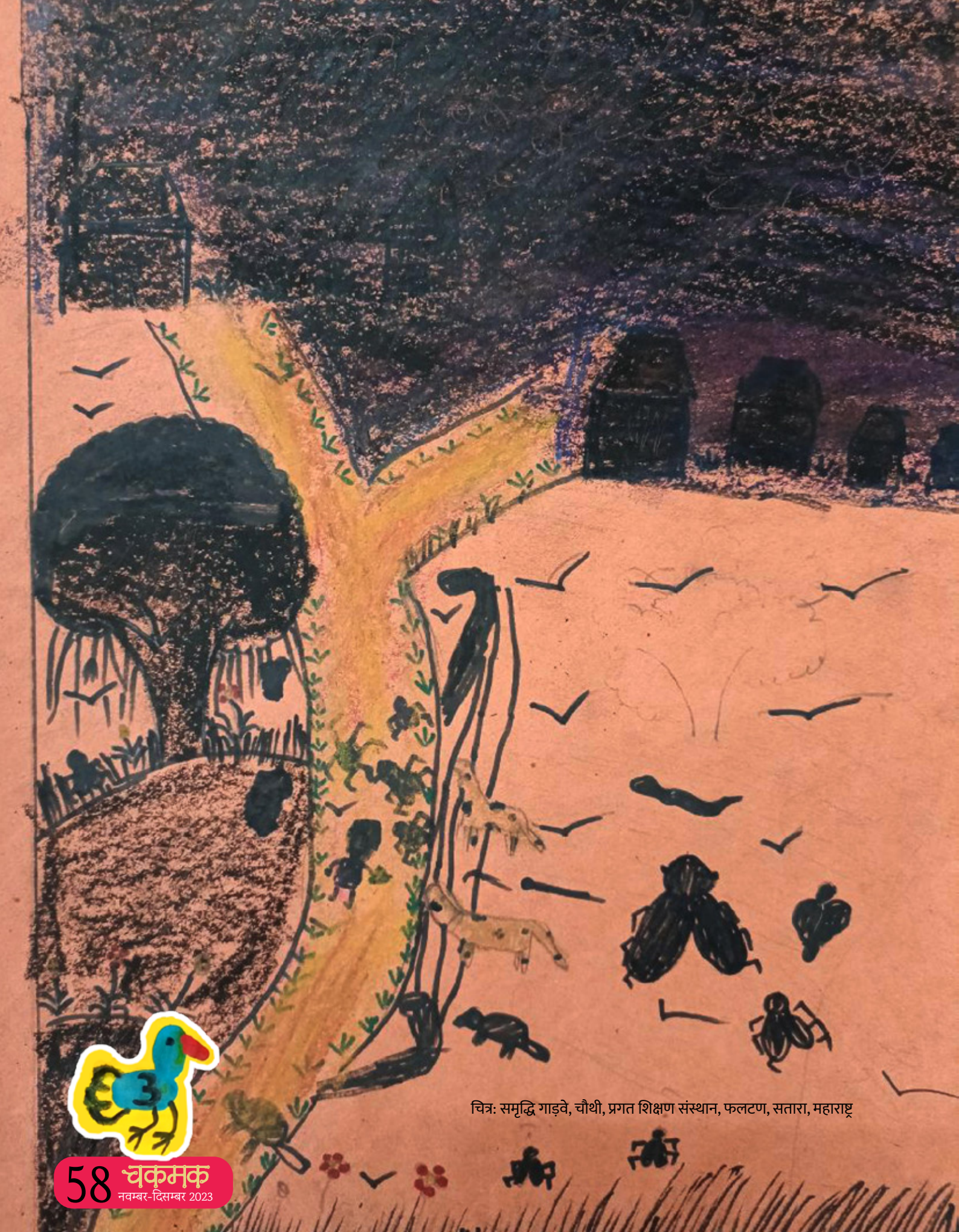

चित्र: समृद्धि गाड़वे, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

भूतिया कुआँ

अमरेश कुमार
तीसरी, यश विद्या मन्दिर
अयोध्या उत्तर प्रदेश

चित्र: राजवीर मोहिते, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक दिन मैं अपनी दादी के पास बैठा था। मैंने अपनी दादी से कहा कि मुझे कोई कहानी सुनाइए। मेरी दादी ने कहा तो फिर सुनो। यह बात सन 1960 की है। अपने घर के सामने एक कुआँ हुआ करता था। सभी गाँववासी कहते थे कि उसे कुएँ में एक भूतिया जानवर रहता था। उसी गाँव में अमन नाम का एक लड़का रहता था। वह इस बात पर यकीन ही नहीं करता था।

एक दिन उसने सोचा कि आज रात को मैं जाकर सब हकीकत पता कर लूँगा। उस रात वह एक लाठी लेकर कुएँ की ओर गया। जैसे ही उसने एक कदम बढ़ाया वैसे ही एक आवाज़ आई। एक पल के लिए वह डर गया। लेकिन अपने कान में रूई डालकर वह आगे बढ़ गया। उसने कुएँ में देखा तो उसमें खेलते हुए कृष्ण जी की एक तस्वीर चमक रही थी। उसने अपने मन में कहा कि मैं कल सुबह गाँववासियों को असलियत बताऊँगा।

सुबह हुई तो उसने अपने पिताजी से कहा, “आज सुबह ग्यारह बजे सभी गाँववाले पंचायत भवन में एकत्रित हो जाएँ।” पिताजी ने पूछा, “क्यों?” उसने कहा, “कुएँ के बारे में बताना है।” सभी गाँववाले एकत्रित हो गए। फिर अमन ने कहा, “कुएँ में कोई खूँखार जानवर नहीं रहता है। बल्कि उसमें खेलते हुए कृष्ण जी की एक तस्वीर पड़ी है। मैं चाहता हूँ कि वहाँ पर कृष्ण जी का मन्दिर बने। सभी गाँववासियों ने कहा, “अवश्य बने।” कुएँ के स्थान पर मन्दिर बनकर तैयार हो गया। तथा उस बालक की भी मूर्ति उस मन्दिर में बनी।

मैं कहानी में इतना मगन हो गया कि कब दादी कहानी सुनाकर चली गईं और कब मुझे नींद आ गई पता ही नहीं चला। वह मन्दिर अभी भी हमारे गाँव में है। मैं वहाँ जाकर पूजा करता हूँ।

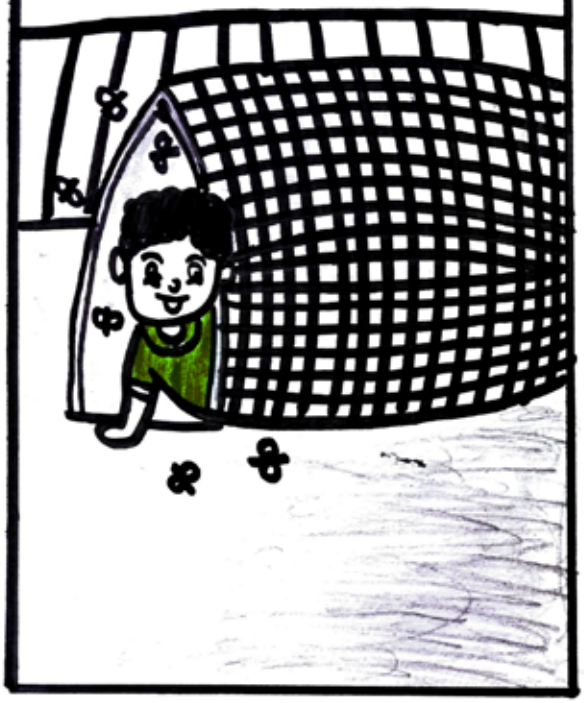

चित्र: उत्कर्ष शर्मा, सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

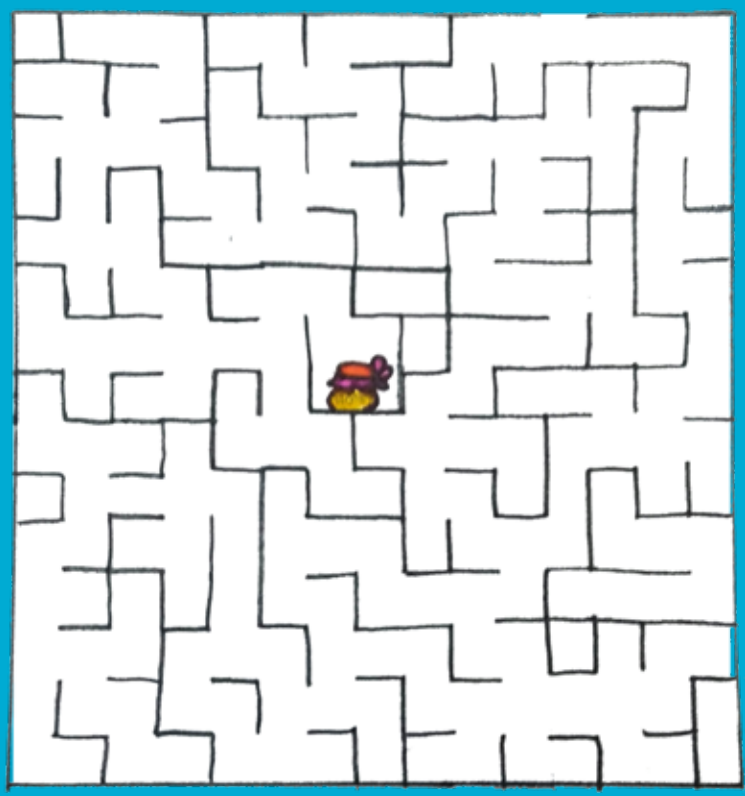

जाँबाज़ कपड़े वाला

पाँचवीं, लखनऊ
उत्तर प्रदेश

एक बार की बात है। एक जंगल में डाकुओं का दल रहता था। वहाँ से कुछ दूर पर एक शहर था। वहाँ पर धनी व्यक्ति रहते थे और वहीं पर व्यापारी व्यापार करते थे। व्यापारी जंगल के दूसरी तरफ रहते थे। एक दिन एक कपड़े वाला जंगल से जा रहा था। तभी डाकुओं ने उसके कपड़े और पैसे सब छीन लिए। कपड़े वाला दुखी मन से गाँव को चला गया। अगले दिन कपड़े वाले ने गाँव के कुछ लोगों के साथ मिलकर डाकुओं को पकड़ लिया। गाँववालों ने डाकुओं को पुलिस के हवाले कर दिया। डाकुओं ने जिस-जिस का सामान छीना था पुलिस ने उसे उन गाँववालों को वापस कर दिया।

चित्र: प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र के बच्चों द्वारा मिलकर बनाया गया

तुम भी बनाओ

जुगाड़: स्ट्रॉ, दो चौकोर कागज़ और चिपकाने के लिए गोंद या फेविकोल।

प्रभाकर डबराल

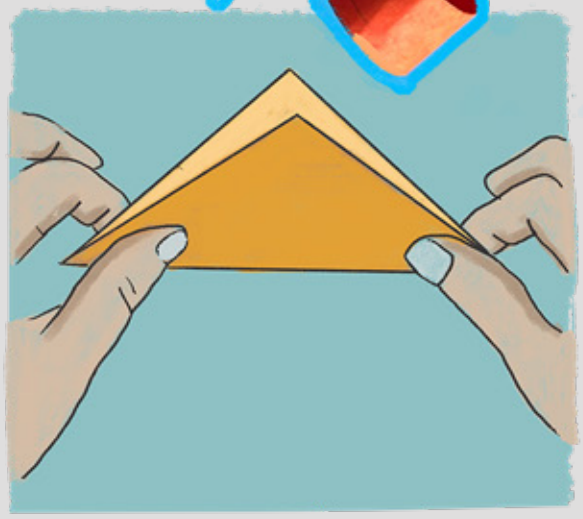

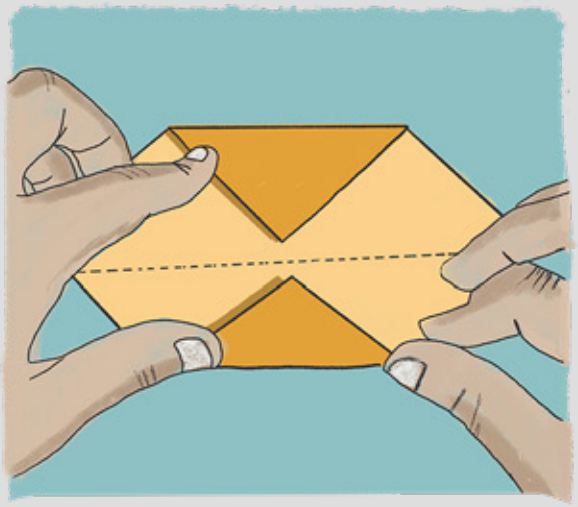

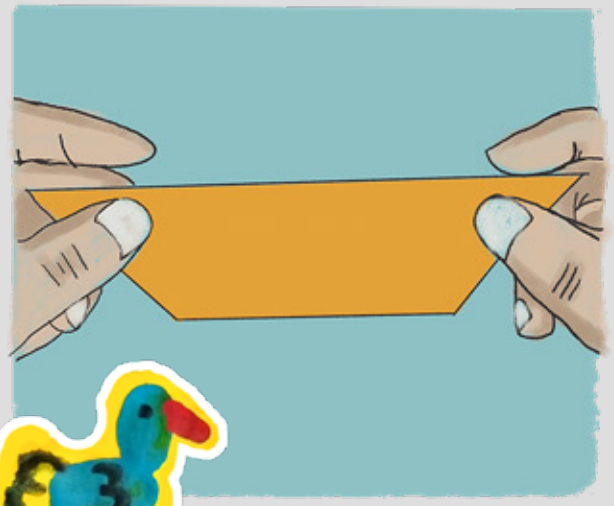

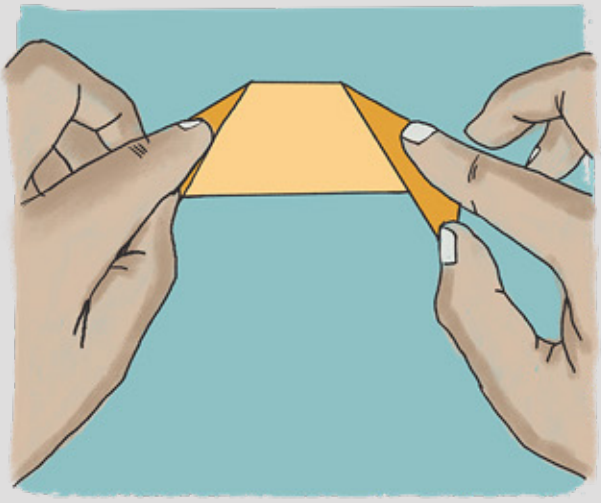

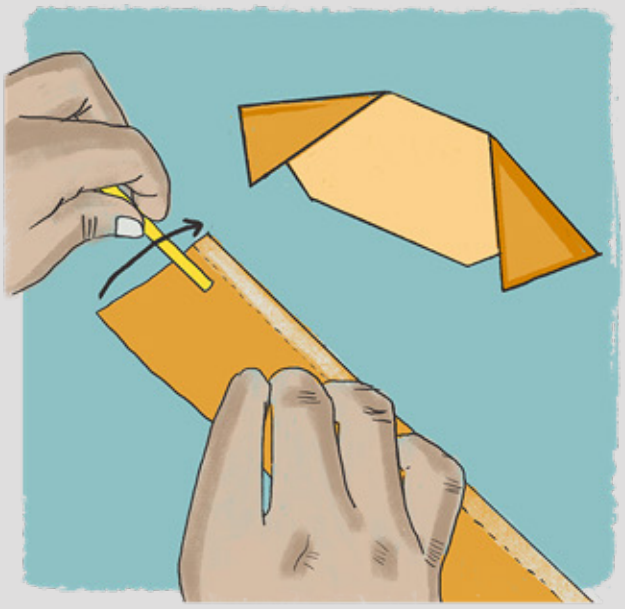

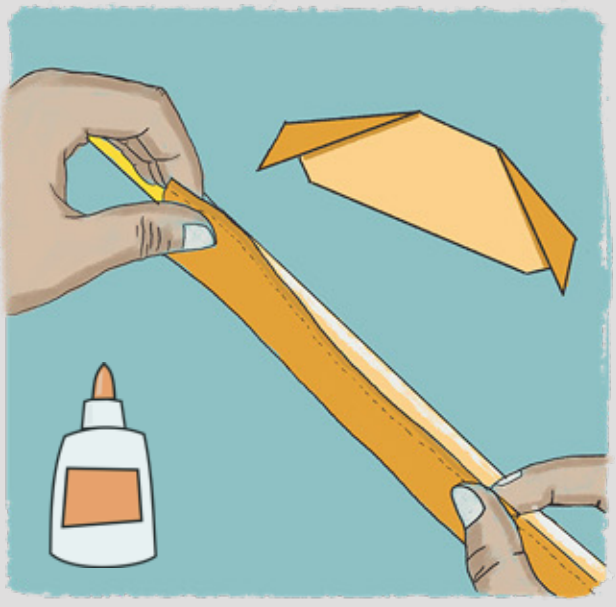

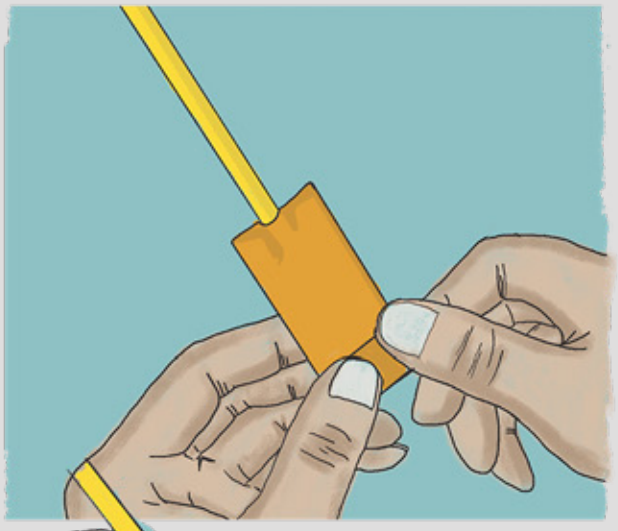

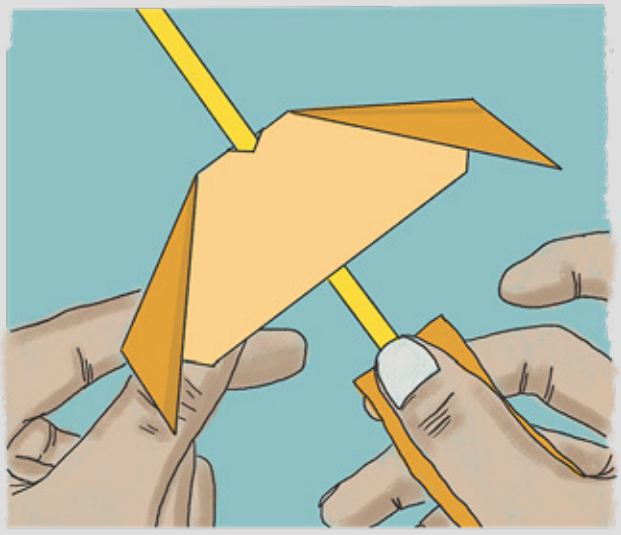

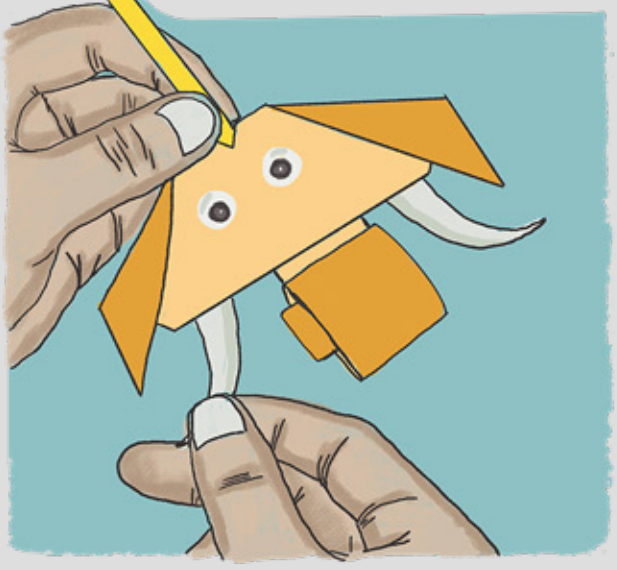

9. दिए गए चित्र में तुम्हें समान रंग के गोलों को जोड़ना है। पर ध्यान रखना कि तुम्हारी लाइनें एक-दूसरे को काट नहीं सकतीं।

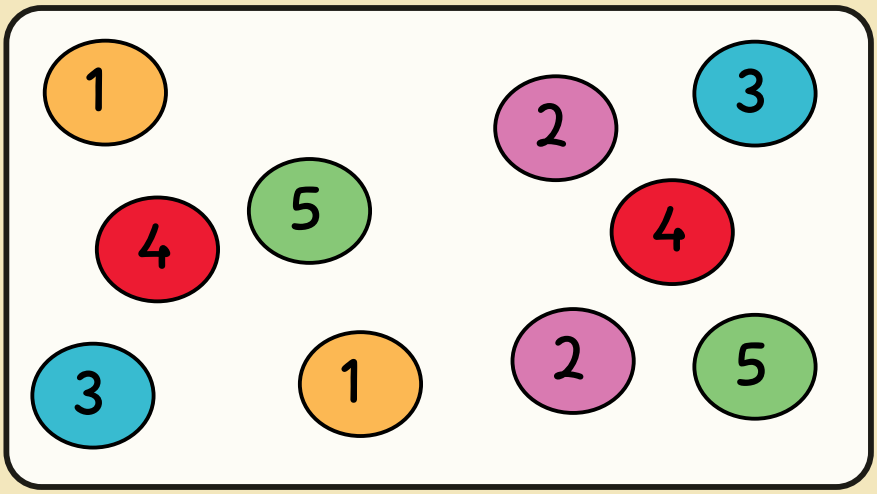

10. एक मेज़ पर 7 मोमबत्तियाँ जल रही थीं। तभी अचानक से खिड़की से हवा का झोंका आया और 3 मोमबत्तियाँ बुझ गईं। तो बताओ बाद में कितनी मोमबत्तियाँ बचेंगी?

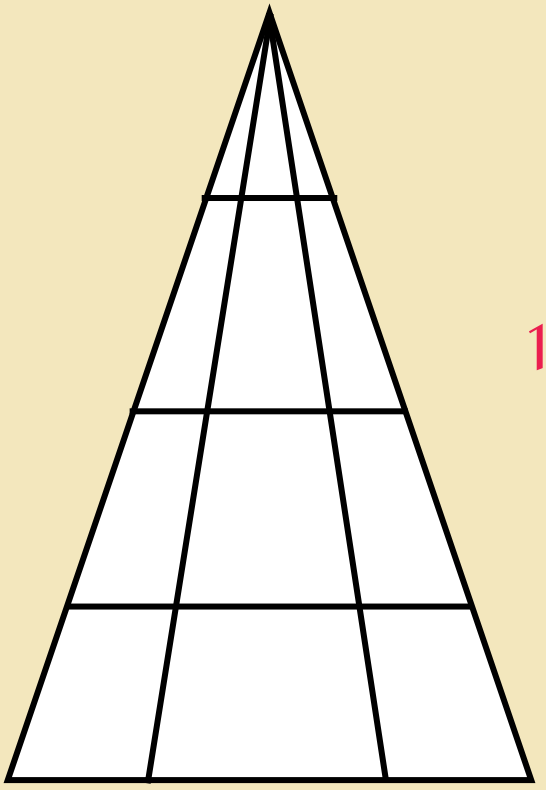

11. सारा ने 8 दिनों में 60 कचौड़ियाँ खाईं। उसने हर रोज़ पहले दिन से 1 कचौड़ी ज़्यादा खाई। इस आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि पहले दिन उसने कितनी कचौड़ियाँ खाईं?

12. दी गई ग्रिड में कई सारे खेलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ता	श	बै	लं	ग	ड़ी	गि
हॉ	त	कं	ड	ता	कि	ल्ली
की	रं	सा	चे	मिं	फु	डं
कै	ज	ना	क्रि	के	ट	डा
र	स्सा	क	शी	पि	बॉ	न
म	पा	ब	लू	डो	ल	खो
कु	श्ती	ड्डी	टै	नि	स	खो

13. इस चित्र में तुम्हें कितने त्रिभुज दिख रहे हैं?

माथापच्ची

फटाफट बताओ

14. नीचे एक नम्बर लॉक को खोलने के लिए कुछ क्लू दिए गए हैं:

- 348 - एक नम्बर सही है और सही जगह पर है।
- 854 - कोई भी नम्बर सही नहीं है।
- 893 - दो नम्बर सही हैं, लेकिन गलत जगह पर हैं।
- 591 - दो नम्बर सही हैं, लेकिन गलत जगह पर हैं।

इन क्लू के आधार पर क्या तुम नम्बर लॉक का कोड पता कर सकते हो?

15. तीन लगातार आने वाले दिनों का नाम बताओ लेकिन बुधवार, शुक्रवार और रविवार का नाम लिए बिना?

16. रिया के बगीचे में 9 पेड़ हैं। वह चौकोर बाड़ लगाकर सारे पेड़ों को इस तरह अलग करना चाहती है कि बाड़ को पार किए बिना कोई भी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर ना जा सके। इसके लिए उसे कम से कम कितनी बाड़ लगानी होंगी?

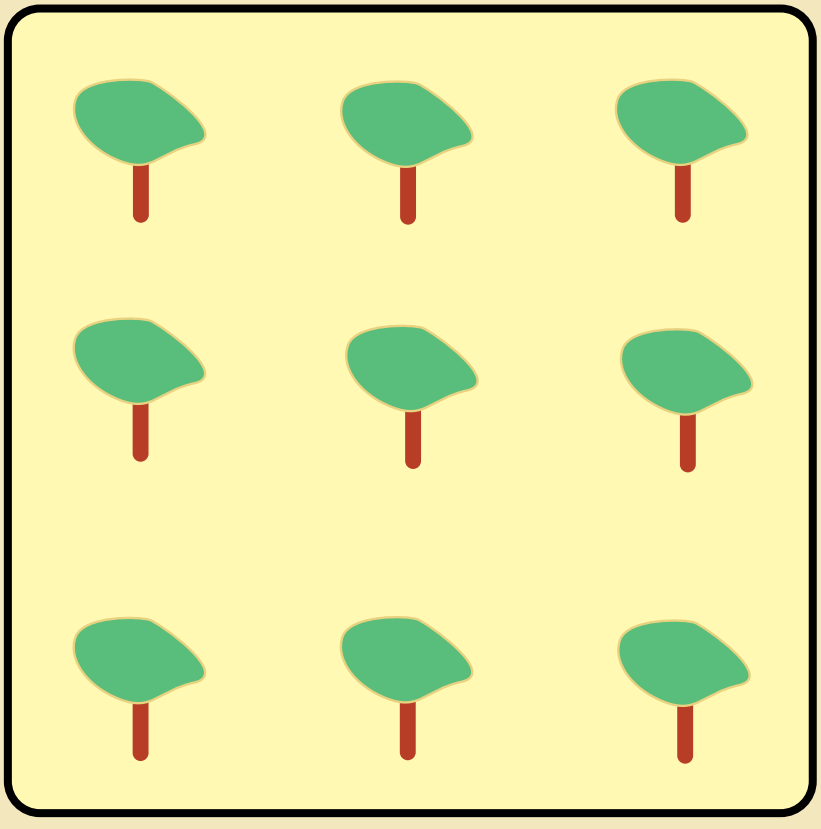

कौन-सी चीज़ है जो बिना
पैरों के चलती है?

(ड़िउ)

सोनाक्षी अदमाची, छठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम झुनकर, केसला, मध्य प्रदेश

मैं जड़ हूँ, तेज़ हूँ
रंग है मेरा हल्का भूरा
चाय में पीसकर डालो
स्वाद लो तब पूरा

(क९ाद)

प्रकृति बकोरिया, आठवीं, एकलव्य सेंटर, ग्राम दाउदी, केसला, मध्य प्रदेश

पक्का कुआँ, गदगद माटी
उसमें लोटे सफेद हाथी

(ाक5म ड़िइ)

अभय सिंह गौर, पाँचवीं, ऑक्सफोर्ड कॉन्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

खूब सारी खबरें लाता हूँ
सुबह-सुबह मैं आता हूँ
कागज़ पर लिखा जाता हूँ
सोचो क्या कहलाता हूँ?

(ग्राक्छाद

मनीष, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, जोग्यूरा, खुर्पाताल, नैनीताल, उत्तराखण्ड

जवाब पेज 86 पर

क्यों क्यों क्यों

पिछले क्यों-क्यों में हमारा सवाल था—
हम सभी किसी न किसी तरह की मान्यता में यकीन करते हैं। इनमें से कुछ मान्यताओं को अन्धविश्वास भी कह सकते हैं। क्या तुम भी किसी तरह की मान्यता में यकीन करते हैं? क्यों?
कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल—

सर्दी के मौसम में अक्सर बच्चों को ठण्डी चीज़ें खाने-पीने को मना किया जाता है यह कहकर कि ज़ुखाम हो जाएगा। क्या तुम्हें इस बात में सच्चाई लगती है? यदि हाँ, तो क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।
जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

चित्र: तन्नू, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

बहुत लोग घर पर नींबू और मिर्च टाँगते हैं ताकि नज़र ना लगे।

सलोनी, सातवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मेरी मम्मी कहती हैं कि हमको कभी खाट नहीं घसीटनी चाहिए। खाट घसीटने से घर पर कर्ज़ा होता है। तेरी छोटी बुआ खाट घसीटकर इधर से उधर करती थीं तो हम लोगों पर इतना कर्ज़ा हो गया कि तुम्हारे दादा जी को ज़मीन बेचनी पड़ गई थी।

हिताक्षी, चौथी, प्राथमिक विद्यालय, बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

मेरी दादी कहती हैं कि अण्डूआ के पेड़ पर जो फल लगते हैं उनको कभी किसी की कमर पर नहीं मारना चाहिए। जिस इन्सान की कमर पर अण्डूआ का फल लग जाता है उस पर मुसीबत आ जाती है। मेरे चाचा के दोस्त ने उनकी कमर पर अण्डूआ का फल मार दिया था तो उनको उसी दिन साँप ने काट लिया था। वो तो जल्दी ही उनको अस्पताल ले गए जिससे उनकी जान बच गई।

अतुल, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

ऐसी मान्यता है कि खटिया पर बैठकर रोटी नहीं खाते। जो ऐसा करता है उसको मिर्गी जैसे आती है और कुछ भी याद नहीं रहता। मेरी दादी ने ऐसा किया था तो उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। एक दिन दादी नदी में गई तो उनको कुछ भी याद नहीं रहा और वो डूबकर मर गईं।

उमेश कलते, आठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, मरयारपुर, केसला, मध्य प्रदेश

रात के समय सीटी नहीं बजानी चाहिए। हमारे गाँव में यह मानते हैं कि रात को सीटी बजाने से घर में साँप आने लगते हैं।

सतेन्द्र धूमकेती, चकमक क्लब, उदयपुर, बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

लोग कहते हैं कि कहीं बैठे हो तो पैर मत हिलाओ लेकिन मुझे और मेरे घर को तो कुछ नहीं हुआ। लोग तो कुछ भी कहेंगे लोगों का काम है कहना। कुछ मत सुनो तुम लोग अपनी राह पर चलते रहना।

अभय सिंह, छठवीं, ऑक्सफोर्ड कॉन्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

यह एक अन्धविश्वास है कि अलादीन होते हैं। ऐसा सिर्फ कहानियों में ही होता है। कुछ लोगों का मानना है कि अलादीन होते थे, जबकि ऐसा नहीं है।

नाज़नीन, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

चित्र: तन्नू, सातवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

बँधी हुई गाय अगर मर जाती है, तो जिसने भी गाय को बाँधा था उस इन्सान या बच्चे को पाँच गुरुवार गाँव से बाहर रखते हैं। गाँव में ऐसा हमेशा होता है। और पूरे केसला के आदिवासी समुदाय में सब दूर ऐसी मान्यता है।

करन भुसारे, सातवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम मरयारपुरा, केसला, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव में यह मान्यता है कि रात को रोना नहीं चाहिए। क्योंकि कहते हैं कि रात को अरुआ आता है और इन्सानों की ही तरह आवाज़ निकालता है। और यदि उसे कोई भी कुछ फेंककर मार देता है तो उसे उठाकर ले जाता है। और पानी में डुबाता है और कपड़े की तरह लटका देता है। तो उस आदमी की तबीयत खराब हो जाती है। मैं यह अरुआ को मानता नहीं हूँ।

भूपेन्द्र धूमकेती, सातवीं, चकमक क्लब, उदयपुर, बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

ऐसी मान्यता है कि हमें कभी कब्रिस्तान के अन्दर या उसके आसपास सैंट या इत्र लगाकर नहीं जाना चाहिए। क्योंकि इत्र लगाकर जाने से भूत-प्रेतात्मा पीछे लग जाती हैं। पर मैं ऐसी किसी भी मान्यता पर विश्वास नहीं करती क्योंकि मैं बहुत बार कब्रिस्तान के पास से इत्र लगाकर गई हूँ। पर मुझे कुछ नहीं हुआ।

काजल ढाल, नौवीं, शासकीय माध्यमिक हाई स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

ऐसी एक मान्यता है कि अगर मेंढक को पत्थर मारते हैं तो पत्नी गूँगी मिलती है। मेंढक उछलते-कूदते चलता है इसलिए हम बच्चे उससे डरते हैं। इसी कारण मेंढक के दिखने पर हम बच्चे उसे पत्थर मारते हैं। परन्तु मेंढक खेती के लिए बड़ा ही उपयुक्त प्राणी है। वो बहुत सारे कीटों को खा जाता है जो खेती के लिए उपद्रवी होते हैं। इसलिए मेंढकों को मार गिराने से खेती को नुकसान होता है। शायद इसीलिए किसी ने जान-बूझकर ये बात फैलाई होगी कि मेंढक को पत्थर मारने से गूँगी पत्नी मिलेगी। वैसे केवल नर मेंढक ही टर्र-टर्र आवाज़ निकाल सकता है। और मादा मेंढक सच में गूँगी होती है। ऐसा मुझे लगता है।

प्रज्वल अहिवले, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरे गाँव में एक बरगद का पेड़ है। सब बोलते हैं कि बरगद के पेड़ पर एक चुड़ैल रहती है। पर मैंने अपनी मम्मी से पूछा तो मेरी मम्मी ने कहा कि ये सब अन्धविश्वास होता है।

विनीता, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

जब किदरी (एक चिड़िया) रोती है, तो कुछ बुरा होता है। मुझे लगता है कि यह सच है। क्योंकि एक बार हम मेहमानी से लौट रहे थे। तो किदरी बहुत रो रही थी। हम आधे रास्ते में पहुँचे और हमें एक आदमी ने बताया कि दो लोगों की एक साथ मौत हो गई है।

विशाल कुमरे, सातवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम कोटमीमाल, केसला, मध्य प्रदेश

मेरे घर में एक बार टीवी पर भागवत चल रही थी। सभी घरवाले भागवत देख रहे थे तो मैं भी देखने लगा। भागवत में महाराज जी ने एक बात कही जिसे सुनकर मैं बहुत खुश हो गया। महाराज जी ने कहा था कि पेपर के दिन गाय माता को दो रोटी खिलाने से पेपर में पास हो जाओगे। पेपर के दिन मैंने ऐसा ही किया। गाय को रोटी खिलाकर मैं पेपर देने चला गया। सर ने सभी को पेपर दिए। सब पेपर हल करने लगे। लेकिन मैं बैठा रहा। मुझे पता था मैं पास हो जाऊँगा। मैंने नहीं लिखा। कुछ दिनों में मेरा रिज़ल्ट आया और मैं फेल हो गया। मुझे घर में बहुत डाँट पड़ी। फिर मैंने अगली बार गाय को रोटी नहीं खिलाई। पढ़ाई की और पेपर में लिखा। अब की बार के रिज़ल्ट में मैं पास हो गया। मैं बहुत खुश हुआ और फिर दुबारा कभी ऐसी बात पर विश्वास नहीं किया।

अनुज बारस्कर, चौथी, ग्राम धपाड़ा, शाहपुर, बैतूल, मध्य प्रदेश

चित्र: वरद जगताप, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमारे गाँव में यह मान्यता है कि हमारे स्कूल में रोज़ बहुत-सी आवाज़ें आती हैं। स्कूल की छत पर जो लोग सोते हैं वो बताते हैं कि स्कूल में भूत है। पर हमें ऐसा नहीं लगता है। जब हम स्कूल जाते हैं तब तो स्कूल में कुछ नहीं होता। पर एक दिन मैंने यह महसूस किया कि हम लोग चार बजे रोज़ स्कूल व्यवस्थित करके जाते हैं और सुबह देखते हैं तो स्कूल में सब कुछ बिखर जाता है।

शेखर, छठवीं, चकमक क्लब, उदयपुर, बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

मेरे घर में दादी बोलती हैं कि काँच टूटने और दूध उफनने पर कुछ अनहोनी हो जाती है। पर मैं ऐसा नहीं मानता हूँ। लेकिन मम्मी कहती हैं कि शाम के टाइम देली में चप्पल नहीं उतारना चाहिए क्योंकि शाम के वक्त लक्ष्मी जी आती है। इसलिए मैं चप्पल बीच देली में नहीं उतारता हूँ।

मानव प्रजापति, छठवीं, होली एंजेल स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया था कि 108 बार ताली बजाने के बाद अपनी इच्छा लिखो तो वह इच्छा पूरी हो जाती है। मैंने ऐसा किया लेकिन मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई। इसलिए मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है।

पवन ढाल, छठवीं, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

मैं मेरे पापा के साथ हमेशा खेत पर जाता था। एक दिन वहाँ पर नल में पानी भरने तीन-चार महिला जा रही थीं। तो मेरे पापा ने कहा कि आज तो खाली गुण्डी मिल गई पता नहीं काम होगा कि नहीं आज। तो मैंने मेरे पापा से पूछा कि खाली गुण्डी से क्या होता है। तो पापा ने कहा कि खाली गुण्डी मिल जाती है तो हम जो काम के लिए निकलते हैं वो नहीं होता है। और हम वहाँ से वापिस लौट आए। एक बार मैं अपने भाई के साथ बाज़ार जा रहा था। तब भी खाली गुण्डी दिखी। लेकिन मेरे भाई ने नहीं देखी और मैंने भी नहीं कहा। उस दिन मुझे डर लग रहा था कि बाज़ार में मेरे कपड़े-जूते मिलेंगे कि नहीं। क्योंकि खाली गुण्डी मिली थी। लेकिन उस दिन मेरे सब काम अच्छे हुए। और उस दिन के बाद से मैंने इस बात पर यकीन नहीं किया।

अनुज, पाँचवीं, ग्राम धपाड़ा, शाहपुर, बैतूल, मध्य प्रदेश

मम्मी कहती हैं कि पीरियड्स में अचार नहीं खाना चाहिए। यह खराब माना जाता है। पर मैं कहती हूँ कि मम्मी ऐसा कुछ नहीं होता मैं तो खाऊँगी।

सोनम, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मेरे घर में मेरी मम्मी एक बाबा को मानती हैं। हम लोग इन बातों को अन्धविश्वास मानते हैं। लेकिन हमारी मम्मी तो अन्धविश्वास को मानती हैं। बाबा लोग हमारे घर पर आकर झूठ बोलकर हम लोगों से पैसा माँग लेते हैं। और फिर थोड़ी देर बाद चले जाते हैं। और बाद में हमारी मम्मी हमसे बोलती हैं कि कुछ तो हुआ ही नहीं है।

पिंकेश उइके, दसवीं, शासकीय हाई स्कूल कुण्डी, मगरडोह, शाहपुर, बैतूल, मध्य प्रदेश

चित्र: आराध्या सपाटे, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बहुत-से घरों में यह मान्यता है कि लड़कियों को देर रात तक घर से बाहर नहीं रहना चाहिए। क्योंकि लड़कियों को रात को खतरा होता है। लड़कियाँ बहुत नाज़ुक और कोमल होती हैं। इसलिए रात के खतरों से वाकिफ नहीं होतीं। पर मैं इस मान्यता को नहीं मानता। क्योंकि लड़कियाँ सभी खतरों का सामना कर सकती हैं। ऐसी ही एक और मान्यता है कि प्रेगनेंट महिला का ग्रहण के दिन घर से बाहर निकलना सही नहीं होता और उनका किसी नाले के ऊपर से जाना भी खतरनाक होता है। ऐसी मान्यताओं का कोई मतलब नहीं है।

निहार गायकवाड़, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक दिन मेरी मम्मी का सिर बहुत दुख रहा था। मेरे पापा मेरी मम्मी को एक बाबा के पास ले गए। बाबा ने मेरी मम्मी का सिर झाड़ दिया। तो मेरी मम्मी का सिर दर्द थोड़ी देर के लिए बन्द हो गया। तब से पापा कहते हैं कि बाबा पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

वेदांश, तीसरी, ग्राम भौरा, शाहपुर,
बैतूल, मध्य प्रदेश

जवाब पेज 86 पर

हामिद को हमारी चिट्ठी

प्रिय हामिद,

तुम्हारे बारे में कहानी पढ़कर बहुत अच्छा लगा। तुम तो बस तीन पैसे लेकर गए थे। और सोच रहे थे कि उस पैसे से तुम कोई ऐसी चीज़ लो जो ज़्यादा दिन तक टिके। तुम कुछ खाए भी नहीं और खिलौने भी नहीं लिए। सोचते-सोचते तुम अपनी दादी के लिए चिमटा लिए। तुमने अपने दोस्तों को बताया कि चिमटा बहुत अच्छा है। हम इसको बजार (पटक) भी देंगे तो भी यह नहीं टूटेगा। बाकी सब खिलौनों को बजार देंगे तो वो टूट जाएँगे। हम भी कभी-कभी ऐसा काम करते हैं कि कोई सामान खरीदने के लिए पैसा जमा करके खरीदते हैं। कभी-कभी कोई खाने की चीज़ बेचने वाला आता है तो नहीं खाते हैं। इस तरह हम भी पैसे बचाते हैं।

तुम्हारा दोस्त
अंगद कुमार
पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

प्रिय हामिद,

मैं ज्योति। अगर तुम चाहो तो हम अच्छे मित्र बन सकते हैं। मैंने तुम्हारी कहानी पढ़ी। तुम्हारे अन्दर भरे त्याग और सद्भाव को देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। इतनी छोटी उम्र में घर के हालातों को समझते हुए सही फैसला लेना किसी भी बच्चे के लिए बहुत मुश्किल होता है। खासकर तब जब सारे बच्चों को झूला झूलते हुए देखो, मिठाइयाँ खाते हुए देखो, खिलौने खरीदते हुए देखो। ऐसे में किसी का भी मन ललचाएगा। लेकिन तुमने अपने मन को समझाते हुए कितना अच्छा काम किया। मेरा तो ये मानना है कि हर बच्चे को तुम्हारी तरह होना चाहिए। बस अब मैं तुमसे विदा लेती हूँ।

तुम्हारी दोस्त
ज्योति
पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

प्रिय हामिद,

तुम आनेवाले ईदगाह के मेले में ज़रूर जाना और तरह-तरह की मिठाइयाँ खाना। खिलौने भी लेना और झूलों पर भी ज़रूर झूलना। खूब मस्ती करना। मज़े से दोस्तों के साथ मेले में घूमना। यही मेरी आशा है।

तुम्हारा दोस्त
दिवाकर
पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन एकेडमी, पोखरामा
लखीसराय, बिहार

मेरी चिट्ठी

प्रिय कलाकार कनक शशि,

मुझे आपके बनाए चित्र देखकर बहुत ही आनन्द आया। आपने *पायल खो गई* किताब के सभी चित्र बहुत ही सुन्दर व जीवन्त बनाए हैं। आवरण के दृश्य को देखकर लगता है कि यह कहानी किसी लड़की की है जो झुग्गी में रहती है और तार पर चलने का करतब दिखाती है। मैंने भी ऐसे करतब सड़क किनारे देखे हैं।

सभी चित्रों में मुझे एक चित्र बहुत अच्छा लगा जिसमें रोडलाइट बत्ती बनी हुई थी। चित्र में एक लड़की अपने सर पर रोडलाइट लेकर चल रही थी। मैंने कभी किसी शादी में लड़कियों को रोडलाइट लेकर जाते हुए नहीं देखा। और ना ही मैं चाहती हूँ कि लड़कियों को यह काम करना पड़े।

अन्तिम पन्ने पर बना चित्र जिसमें सभी बच्चे नाच रहे हैं और एक केक रखा है, वह भी बहुत सुन्दर है। मैं ऐसा चित्र बनाने की कोशिश कर रही हूँ। आपके बनाए चित्रों वाली कोई और किताब मिली तो उसे भी पढ़कर चित्र बनाऊँगी।

आपकी सबीना

सातवीं, कम्पोज़िट स्कूल, धुसाह
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा नाम पीयूष मीना है। मेरा जन्म राजस्थान के अलवर ज़िले के एक छोटे-से गाँव जमडोली गुवाड़ा में हुआ। मैं सन 2012 में पैदा हुआ। 2016 में उत्तर प्रदेश आया क्योंकि मेरे पिताजी उत्तर प्रदेश में जॉब करते थे। मुझे गाँव छोड़कर कहीं भी जाना पसन्द नहीं था।

जब मैं उत्तर प्रदेश के अयोध्या ज़िले के दर्शन नगर में आया तो मुझे यहाँ जलकुम्भी अच्छी नहीं लगी। मैं अपने गाँव की कुछ चीज़ों को बहुत याद करता था। जैसे कि दीदी के साथ ज़बरदस्ती स्कूल जाना, अपने कुत्ते के साथ खेलना, भैंसों को नहलाना, चाची के लड़के के साथ घूमने जाना, दादा के साथ पहाड़ों पर जाना और बहुत-सी चीज़ें।

मैं दो महीने बाद फिर गाँव आया। मुझे मेरी जिनड़ी की बहुत याद आती है। आप सोच रहे होंगे कि जिनड़ी कौन है। जिनड़ी मेरे घर की एक गाय है। वह एक गाय की बच्ची थी जो मेरे साथ खेलती थी। मैं उसे नहलाता और रोटी खिलाता था। उसे दादा के साथ पहाड़ों पर घुमाने ले जाता। पर अफसोस वह बीमारी के कारण मर गई। मुझे जिनड़ी बहुत याद आती है। यह देखकर दादी ने मुझे एक कुत्ता लाकर दिया। और मैं उसके साथ खेलता हूँ।
इन सबको यादों में समेटे

पीयूष मीना

पाँचवीं 'ए', यश विद्या मन्दिर
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

पापा की दुकान

रजनीश विश्वकर्मा
सातवीं, कम्पोज़िट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा की एक दुकान है। वहाँ लोहे का सामान जैसे खुरपी, खुरपा, फावड़ा, हथौड़ी, हँसिया, कैंची, तसला, बाल्टी आदि बिकता है। मैं दुकान पर जब भी खाना देने जाता था, तब मैं थोड़ी देर दुकान में बैठकर देखता था कि पापा लोहे का सामान कैसे बनाते हैं।

एक दिन मेरे पापा कहीं बाहर गए थे। उस दिन मैं अपने चाचा के साथ दुकान पर गया। मेरे चाचा ने शटर उठाया। मैंने देखा कि कई कड़े बेकार पड़े थे। तो मैंने सोचा क्यों ना खुरपी और हँसिया बनाया जाए। मैंने हँसिया और खुरपी बनाई तो उनको देखकर चाचा बोले, “शाबास बेटा।” फिर चाचा ने उन पर धार लगा दी।

थोड़ी देर में एक ग्राहक आया। उसे हँसिया चाहिए थी। उसने मेरी बनाई हँसिया ही चुनी क्योंकि वह बहुत चमक रही थी।

चित्र: शिवांश यादव, पहली 'ए', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

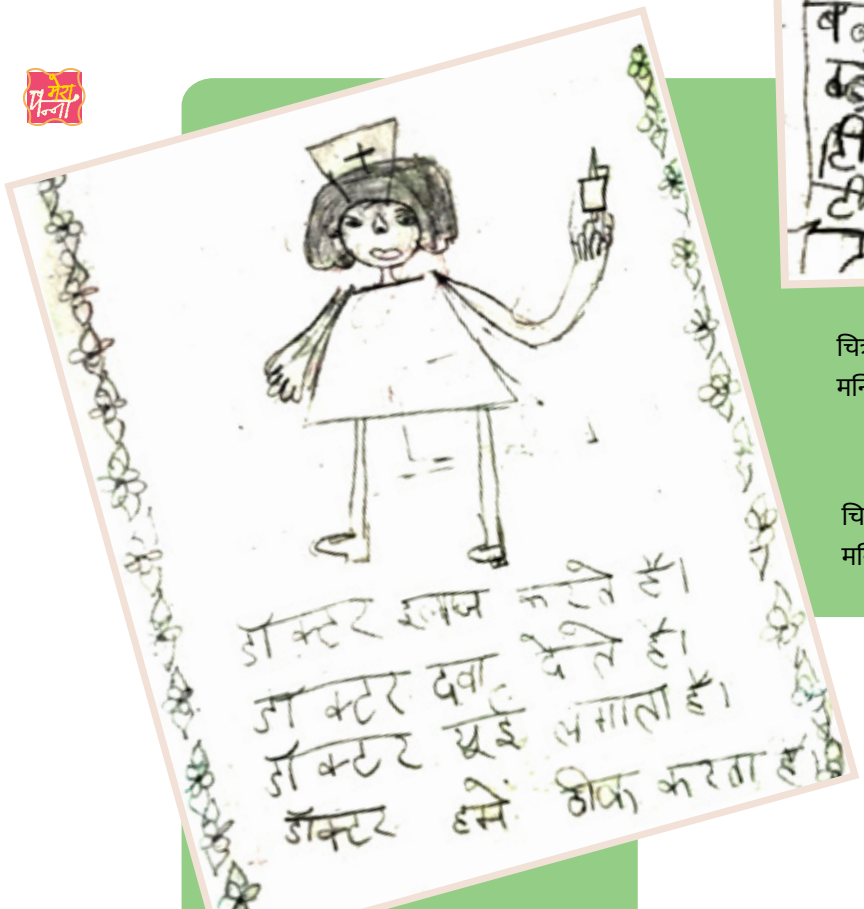

चित्र: आराध्या, पहली 'ए', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

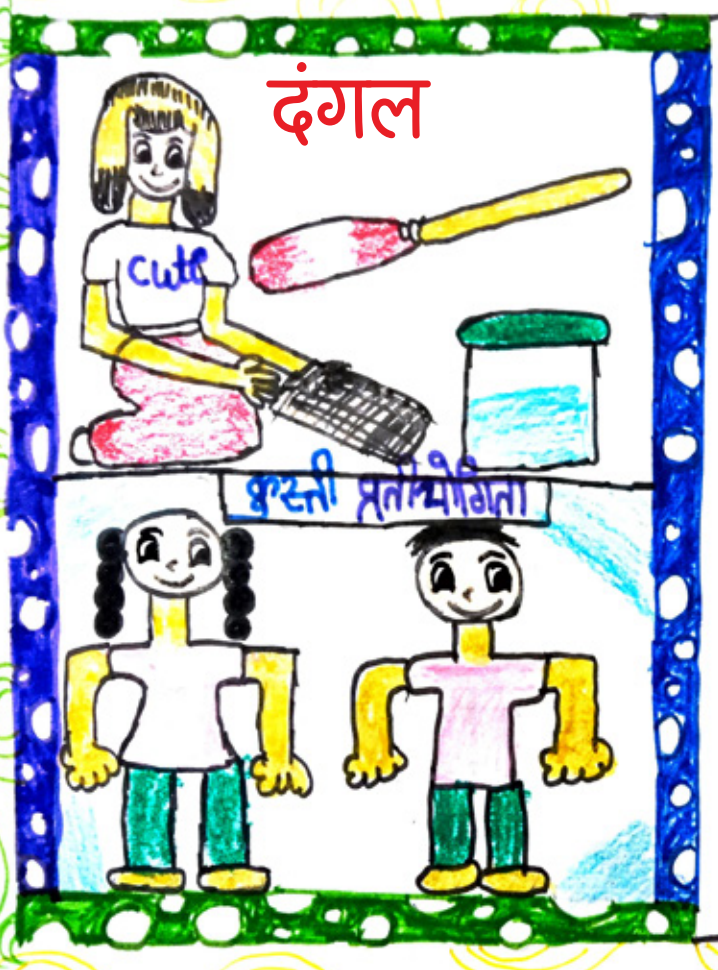

नमस्ते। आप लोगों ने *दंगल* फिल्म तो देखी ही होगी। इस फिल्म से बहुत सारे बच्चों और बड़ों को प्रेरणा मिली होगी। इस फिल्म से मुझे भी प्रेरणा मिली। पहले मैं सोचा करती थी कि लड़कियाँ सिर्फ घर का काम ही कर सकती हैं। वह ना ही क्रिकेट खेल सकती हैं और ना ही कुश्ती लड़ सकती हैं। लेकिन जब मैंने *दंगल* फिल्म देखी तो मुझे यह प्रेरणा मिली कि लड़कियाँ हर चीज़ कर सकती हैं। जब उस फिल्म में वह लड़की कुश्ती लड़ी और जीत भी गई तब मुझे यह प्रेरणा मिली कि मैं भी हर काम कर सकती हूँ।

चित्र: रितु, सातवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

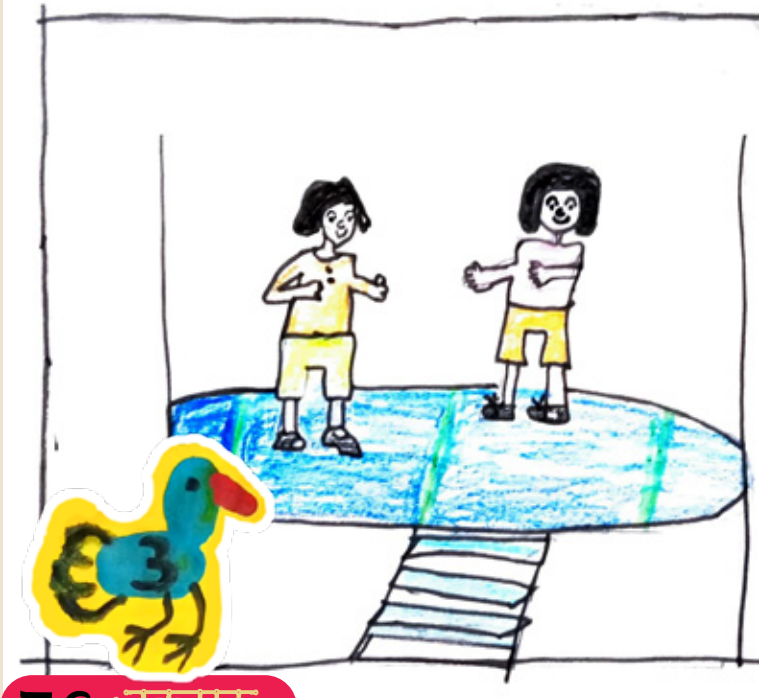

मुझे ये फिल्म बहुत अच्छी लगी। इसमें दो लड़कियाँ हैं। उनके पापा उन्हें दंगल में भेजते हैं। लेकिन उनकी बड़ी बेटी जब इंटरनेशनल खेल में जाती है तो वह हार जाती है। क्योंकि उसकी संगत काफी गलत लड़की से हो गई थी। और जब छोटी बहन इंटरनेशनल खेल में जाती है तो वो अपनी बड़ी बहन को समझाने की कोशिश कर रही थी।

चित्र: नन्दिनी, आठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मेरे गाँव का नक्शा

चित्र: एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम दाउदी, केसला, मध्य प्रदेश के छठवीं से आठवीं कक्षा के बच्चों द्वारा मिलकर बनाया गया।

नानी

अच्छी नानी
प्यारी नानी
लगती हैं भोली नानी
खाना मुझे खिलातीं नानी
चॉकलेट मुझे दिलातीं नानी
कभी-कभी मुझे डाँटतीं नानी
फिर भी अच्छी लगतीं नानी

हितांश जोशी
पहली, केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

चित्र: आरुषि रावत, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: अनूप, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: लक्ष्मी राना, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: आकांक्षा, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: प्रियांशी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: पल्लवी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: शोभित झा, आठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: मानव जवारिया, छठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: आदित्य कुमार, आठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: आराध्या सिंह, पाँचवीं 'बी', यश विद्या मन्दिर,
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सबसे अच्छा दोस्त

पीयूष
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय झिरन्या, खरगौन, मध्य प्रदेश

हम नवरात्रि पर छुपनछुपाई खेल रहे थे। तो भागते-भागते मेरी चप्पल टूट गई तो मैं धड़ाम-से नीचे गिर पड़ा। मेरे पैर से खून बहने लगा। मेरे दोस्त सुमित ने मुझे उठाया। मेरे पैर से खून बन्द नहीं हो रहा था। मैं रोने लगा। मेरा पैर बहुत दर्द कर रहा था। सुमित ने मुझे दगड़ चट्टी (एक पौधा) लगाई। सुमित बोला कि मेरे पास पैसे हैं। मैं दुकान से बैंडेज ले आता हूँ। वो दुकान से बैंडेज ले आया और मेरे पैर में लगा दी। अभी भी मेरा पैर दर्द कर रहा था। मैं ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। सुमित मुझे घर ले गया। उसने मेरी माँ को सारी बात बताई। माँ ने प्यार-से डाँटा। अगर उस दिन सुमित ने मेरी मदद नहीं की होती तो मेरा पैरा ठीक नहीं होता। थैंक यू सुमित।

जाड़े की रात

कंचना तिवारी
छठवीं, राजकीय जूनियर हाई स्कूल पाभै
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

जाड़े की रात जैसे-जैसे बीतती है, वैसे-वैसे ठण्डक भी बढ़ती जाती है। सबसे ज़्यादा ठण्डक सुबह चार बजे से छह बजे के बीच में पड़ती है। जाड़े की रात काफी लम्बी होती है। शाम के सात बजते ही पूरा का पूरा गाँव मर्महीन पत्तों की तरह शान्त हो जाता है। इसलिए प्राय: सबकी नींद सुबह तीन-चार बजे के आसपास अवश्य टूट जाती है। ठण्ड ही इतनी पड़ती है कि बिछावन से उठने का मन नहीं करता। इतनी ठण्ड में भी मुर्गे बाँग दे-देकर हमें जगाने लगते हैं। दूर किसी मन्दिर से लाउडस्पीकर से आती भजन की आवाज़ अच्छी लगती है। वार्षिक परीक्षाएँ दिसम्बर में पड़ती हैं। अत: सुबह उठकर पढ़ना ही पड़ता है।

चित्र: रजिया, पहली 'ए', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

चित्र: आज़ाद, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराकाशी, उत्तराखण्ड

दादी का चश्मा

कौशल जोशी
चौथी, आरोही बाल संसार, प्यूड़ा,
नैनीताल, उत्तराखण्ड

एक समय की बात है। एक बूढ़ी दादी को अपने चश्मों से बहुत अधिक स्नेह था। वह सोते-जागते अपने चश्मों को अपने पास ही रखती थीं। बूढ़ी दादी मेरे दादाजी को बहुत प्रेम करती थीं। और मेरे दादाजी को बूढ़ी दादी के चश्मे बहुत अच्छे लगते थे।

जब बूढ़ी दादी भगवान को प्यारी हो गईं तो मेरे दादाजी ने सभी से पूछा कि दादी के चश्मे कहाँ है। तो सभी ने कहा कि उनके चश्मे उनके शव के साथ ही राख हो गए। इस पर मेरे दादाजी को बहुत दुख हुआ। दादाजी दादी के चश्मों के बारे में बहुत दिनों तक सोचते रहे।

बहुत साल बीत जाने के बाद जब एक दिन दादाजी नौले में नहाने गए तो दादाजी की नज़र भीड़े पर रखे चश्मों पर पड़ी। दादाजी ने चश्मों को गौर-से देखा तो वह उन चश्मों को पहचान गए। वह चश्मे बूढ़ी दादी के थे जो दादाजी के लिए अपनी आखिरी निशान छोड़ गई थीं।

चित्र: शेजल, तीसरी, आशा सामाजिक शिक्षण केन्द्र, कोसड़ा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

प्यारी चिड़िया,

तुम क्या कर रही हो? तुम बहुत सुन्दर लगती हो। तुम्हारा नाम क्या है? तुम एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़कर जाती हो। तुम्हारे अपने बच्चों का नाम क्या है? तुम क्या खाती हो और क्या खेलती हो? मेरा नाम अधिराज है।

अधिराज जुगरान, चौथी, असाम वैली स्कूल, बालीपारा, तेज़पुर, असम

चित्र: अभिनव भाटिया, छठवीं, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुगाँव, हरयाणा

चीं-चीं चिड़िया

सानिध्य मिश्रा
दूसरी, केन्द्रीय विद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

मैं एक दिन जंगल में गया। मैंने वहाँ बहुत सारे जानवर देखे। मुझे वहाँ बहुत मज़ा आया। मैं एक रात वहाँ रुका। जब मैं सोकर उठा तो मैंने देखा एक पेड़ पर चिड़िया चीं-चीं कर रही थी। मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगा। मुझे वहाँ से जाने का मन नहीं कर रहा था।

चित्र: भागीरथी निषाद, चौथी

जुगाड़: अलग-अलग किस्म की पत्तियाँ, फेविकोल, छोटी तीलियाँ और चौकोर कागज़।

शासकीय प्राथमिक विद्यालय, लमती, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़ के बच्चों ने पत्तियों से कुछ कछुए बनाए हैं। कछुओं को बनाने के लिए उन्होंने अलग-अलग तरह की पत्तियों का प्रयोग किया है। तुम भी आज़माकर देखो।

तुम भी बनाओ

कछुआ

चित्र: रिंकी निषाद, तीसरी

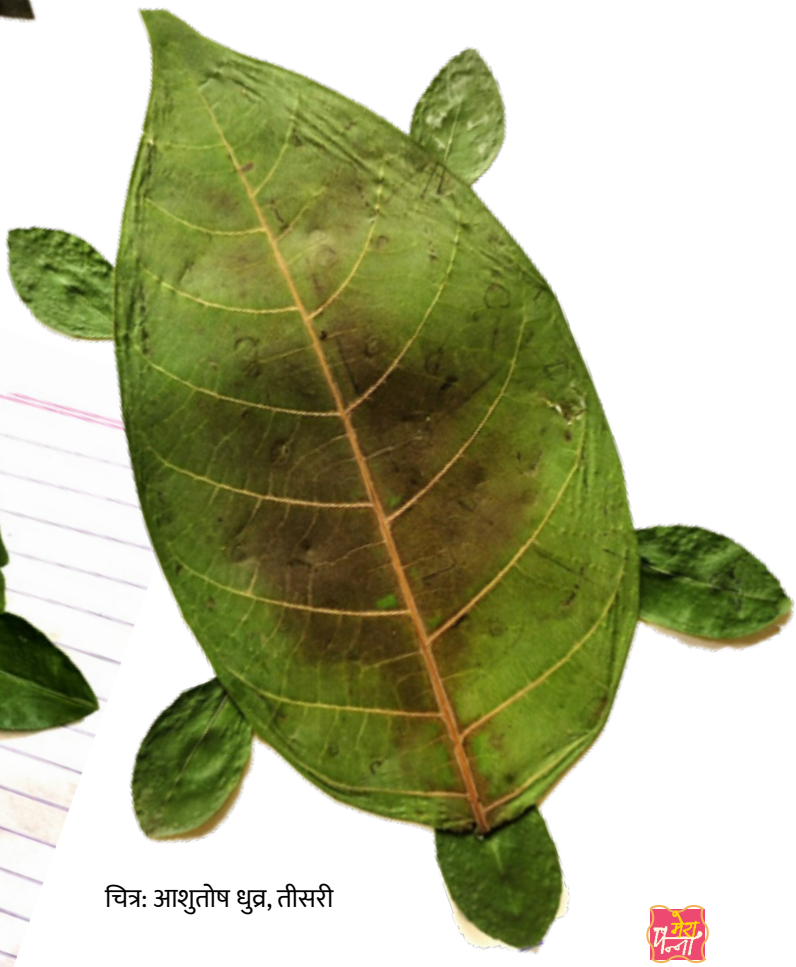

चित्र: आशुतोष धुव्र, तीसरी

चित्र: नवजोत कौर, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

पच्ची जवाब

1. इसका जवाब है:

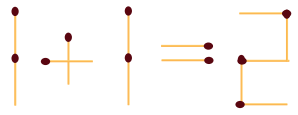

2.

	7	
3	1	4
5	8	6
	2	

3. 3

4. 127, क्योंकि बाकी सभी संख्याओं में 9 का पूरा-पूरा भाग जाता है।

5.

कु	बि	खी	मा	स	मा	ल	पु	आ
इ	म	र	ती	ल	मो	मो	ला	म
ड	पु	पा	या	ना	डो	सा	सैं	ले
ली	ला	फि	र	नी	कि	सें	ड	ट
घे	व	र	व	ड़ा	पा	व	वि	र
ला	नी	र	स	म	ला	ई	च	चा
प	के	क	लि	न	क	लि	या	ऊ
लि	कौं	चौं	दा	ल	बा	टी	टा	मी
सु	रा	ड़ी	गु	ला	ब	ला	मु	न

6. दूसरे नम्बर के गिलास का शरबत पाँचवें नम्बर के गिलास में उड़ेल दो और गिलास को वापिस अपनी जगह पर रख दो।

7. ज़ोया ने गुब्बारे वाले को 5 रुपए के चार सिक्के दिए थे। इससे गुब्बारे वाला जान गया कि उसे 20 रुपए वाला गुब्बारा चाहिए। अंशुल ने उसे 20 रुपए का नोट दिया था। इसलिए गुब्बारे वाले ने उससे पूछा।

8.

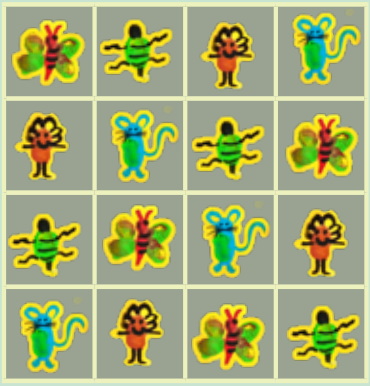

9.

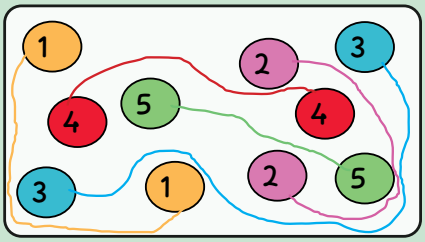

10. वही 3 जो बुझ गई थीं। क्योंकि बाकी तो जलकर खतम हो जाएँगी।

11. मान लो कि पहले दिन उसने x कचौड़ियाँ खाईं। तो दूसरे दिन x + 1, तीसरे दिन x + 2, चौथे दिन x + 3, और इसी तरह आगे भी। 8 दिनों में कुल 60 कचौड़ियाँ खाईं, इसलिए
x + x + 1+ x + 2 + x + 3 + x + 4 + x + 5 + x +6 + x+7= 60
8x + 28 = 60
8x = 60-28= 32
x= 32/8 = 4

12.

ता	श	बै	लं	ग	ड़ी	गि
हॉ	त	कं	ड	ता	कि	ल्ली
की	रं	सा	चे	मिं	फु	डं
कै	ज	ना	क्रि	के	ट	डा
र	स्सा	क	शी	पि	बॉ	न
म	पा	ब	लू	डो	ल	खो
कु	श्ती	ड्डी	टै	नि	स	खो

13. 24 त्रिभुज

14. पहले क्लू के हिसाब से एक नम्बर सही है और सही जगह पर है। दूसरे क्लू के हिसाब से 8 और 4 सही नम्बर नहीं हैं। इससे साफ है कि 3 नम्बर सही है और सही जगह पर है। तीसरे क्लू से पता चलता है कि आखिरी नम्बर 9 है। क्योंकि दूसरे क्लू से हमें पहले ही पता चल चुका है कि 8 सही नम्बर नहीं है। और पहला नम्बर 3 है। आखिरी क्लू में 9 नम्बर तो सही ही है। और क्लू 2 के हिसाब से 5 नम्बर गलत है। इसलिए सही जवाब 319 होगा।

15. कल, आज और कल

16.

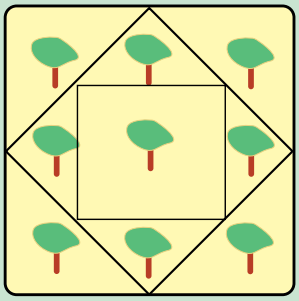

चित्रपहेली पेज 72 का जवाब

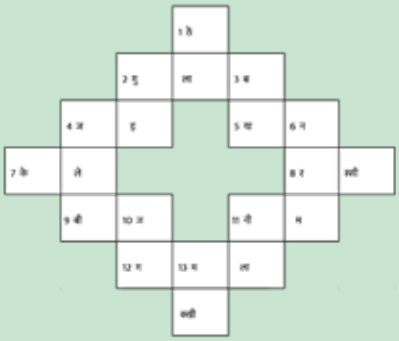

चित्रपहेली पेज 16 का जवाब

पैसिफिक लेम्प्री

उत्तरी प्रशान्त महासागर में पाई जाने वाली पैसिफिक लेम्प्री बिना जबड़े की मछली होती है। यह मछलियों के समूह एग्नाथा से आती हैं। यह समूह 36 करोड़ साल से धरती पर मौजूद है। इसका वैज्ञानिक नाम एन्ट्रोसफिनिस ट्राइटेस है। यह मछली आम तौर पर अलास्का और बेरिंग सागर में पाई जाती है। इनके मुँह के चारों तरफ छोटे-छोटे दाँत होते हैं। इन दाँतों के ज़रिए ये दूसरी मछलियों और व्हेल के शरीर से चिपक जाती हैं और उनका खून चूसकर जीती हैं।

बरमूडा ट्राइंगल

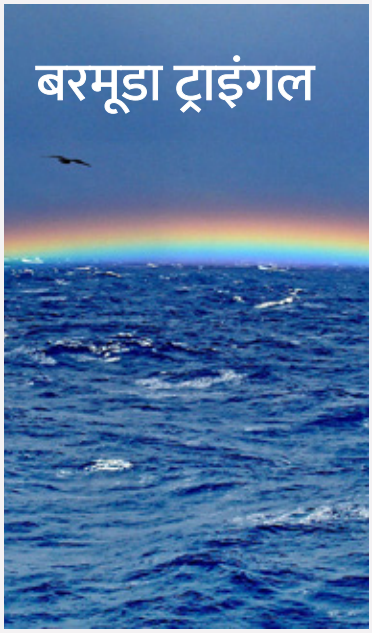

बरमूडा ट्राइंगल उत्तरी अटलांटिक महासागर का एक हिस्सा है। इसे डेविल ट्राइंगल यानी शैतानी त्रिभुज भी कहा जाता है। यह वह जगह हैं जहाँ पर कई प्लेन और जहाज़ खो गए हैं। उन जहाज़ों या उनमें सवार लोगों का कोई सुराग आज तक नहीं मिला है। कहते हैं कि यहाँ के मौसमी हालात कुछ ऐसे हैं कि यहाँ जहाज़ों का समुद्र में एकदम से खो जाना मुमकिन है। यहाँ पर कम कम समय के लिए अचानक से आने वाली भयंकर आँधियाँ और टॉर्नेडो होते हैं, जो जहाज़ों का नाश कर सकते हैं। यहाँ के समुद्र तल से मीथेन गैस के ज़ोरदार विस्फोट भी होते हैं। इनके कारण समुद्री जहाज़ डूब सकते हैं। और पानी से निकलने वाली गैस हवाई जहाज़ों को बम की तरह तबाह कर सकती है। लेकिन कई लोग मानते हैं कि यहाँ किसी जादुई शक्ति या एलियन का हाथ है।

इलेक्ट्रिक ईल

इलेक्ट्रिक ईल मछलियों में सुरक्षित रहने का एक अनोखा ढंग होता है। वे अपने शिकार और हिंसक जीवों को झटका देते हैं। वे एक बार में 600 वोल्ट तक की बिजली पैदा कर देती हैं। इतने वोल्ट का झटका किसी भी मनुष्य के प्राण ले सकता है।

पैसिफिक लेम्प्री व बरमूडा ट्रांइगल: आयुषी पाल, चौथी 'ए', यश विद्या मन्दिर, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

इलेक्ट्रिक ईल: वेदान्त जायसवाल, छठवीं, दि सिंधिया स्कूल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

चित्र: अरनव, तीसरी

चित्र: सुहानी, तीसरी

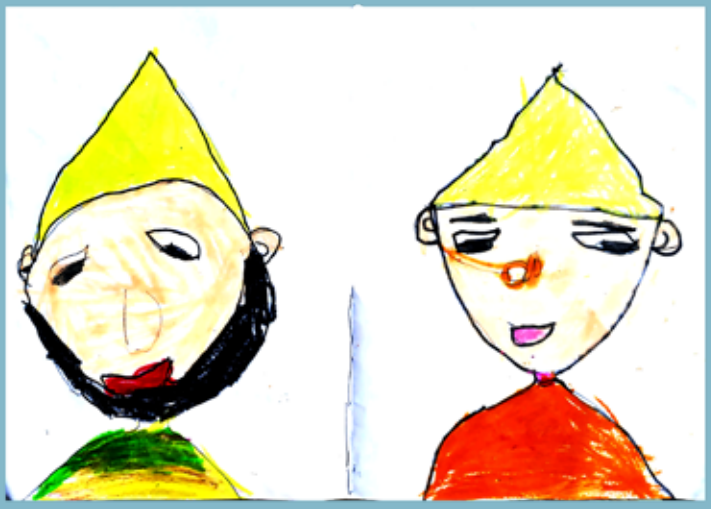

चित्र: आदित्य, तीसरी

चित्र: ऋषभ, तीसरी

चित्र: आदित्य, तीसरी

चित्र: कुशराज, तीसरी

सभी बच्चे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड से हैं।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन